

The Book is Printed on 24 lbs. Double Crown
and Cover on 60 lbs. Paper.

Printed by
HAMZAN ALI SHAH
at the National Press, Allahabad

S M 24

भूमिका

संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा-विभाग की ओर से कल्याण-राष्ट्र-संस्थान की प्राथमिक कक्षाओं के लिये पाठ्य पुस्तकों की रचना की गई है और उनका पाठ्य-क्रम भी निर्धारित कर दिया गया है। इनके अनुसार इस सीरीज़ की रचना की गई है। इन सीरीज़ में निम्नलिखित बातों पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।

पहले और दूसरे भाग के पाठ सरल और बोल-चाल की भाषा में लिखे गये हैं और तीसरे और चौथे भाग के पाठों में मुहावरों का प्रयोग किया गया है। पाठ ऐसे चुने गये हैं जिससे ज्ञानना नगर और गाँव दोनों प्रकार की बालिकाओं के लिये सचिकर और आवश्यक है।

प्रत्येक भाग में छेड़टा छेड़टी गिरावट कहानियाँ, कल्याण-सुधा, वाद विवाद आधुनिक आविष्कार, अन्यथा दूसरे नाम विज्ञान सम्बन्धी पाठ दिये गये हैं। इन पाठों का लक्ष्य छात्रों के लिये प्रत्येक भाग में हिंदी के लिये कठिनता का निर्धारण है।

कल्याण-सुधा नाम का भाग प्रत्येक भाग में एक बार पढ़ा जाय। बहुत से छात्र इस प्रकार सोचते हैं कि यह भाग

नहीं हैं। इसके धनिरिक्त कक्षाओं में लड़कियों की कमी होने के कारण अभ्यापिकाओं को दो-दो मीन-तीन कक्षाओं को एक साथ पढ़ाना पड़ता है। ऐसी अवस्था में प्रत्येक भाग में उतने ही पाठ दिये गये हैं जितने कि वे वर्ष भर के अन्दर पढ़ा सकें। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के लिये प्रश्न भी दे दिये गये हैं। वे उनके लिए केवल पथ-प्रदर्शक हैं, पथान कदापि नहीं हैं। इस सीरीज़ की छवाई में राष्ट्र, साम्राज्य और विश्व के सुताप में विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।

अध्यापिकाओं के प्रति निवेदन .

अध्यापिकाओं को चाहिए कि किसी पाठ का पढ़ाना आरम्भ करने के पहिले उस पाठ से सम्बन्ध रखने वाली कोई रोचक कहानी बालिकाओं को सुनावें जिससे उनका चित्त पढ़ने की ओर आकर्षित हो । फिर पाठ के चित्र पर थोड़ी सी बातचीत करते हुए उस पाठ के शब्दों का प्रयोग करें । इस तरह जब पाठ का सार लड़कियों की समझ में आजाय तब ही उनके पुस्तक खोलने के लिए कहें । बालिकाओं के पुस्तक खोलने पर अध्यापिका को चाहिए कि वह स्वयं थोड़ा सा नमूने के तौर पर पढ़कर उनके सुनावे, इसके पश्चात् कक्षा की तेज़ लड़कियों ने उनके पाठ को पढ़ावे और उसके बाद दूसरी लड़कियों ने पढ़ावे । उनके उच्चारण को और विशेष रूप से ध्यान रखें और साथ ही साथ उनकी अशुद्धियों को दूर करती चारें । कभी कभी का इयामपट्ट पर लिखकर उनका ध्यान आकर्षित कर देंगे । साथ ही और उनके वाक्यों में प्रयोग करके उन्हें समझ में आने देंगे । पाठ के अन्त में कुछ दूर प्रश्नों और उनके उत्तरों के द्वारा बालिकाओं का बुद्धि का परीक्षा करें ।

बाद विषय और इष्ट सम्बन्धों वाले हो सकें ।

अधिक जिला-प्रद और रोचक होगा और इससे लड़कियों को बोलने का शीघ्र अभ्यास हो जायगा ।

भूगोल-सम्बन्धी पाठों को मानचित्र द्वारा पढ़ाना अधिक उपयोगी होगा ।

स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी पाठ पढ़ाते समय मैली और साफ़ लड़कियों को दाँदोतियों में शुनकर उस पाठ की उपयोगिता उन लड़कियों के चित्र पर बातचीत द्वारा जमा दें । घास, गुरबूझा, दिवामन्ताई इत्यादि के पाठ पढ़ाते समय चर्याविकाओं को ब्याहिर कि इन चीज़ों को समाने रण कर लड़कियों को उस पाठ को समझा दें ।

विषय-सूची

पृष्ठ	पृष्ठ
१—मनु का दर्शन (कविता)	१
२—सत्यनारायण (१)	३
३—सत्यनारायण (२)	७
४—बड़ी बुद्धिसे का सम्मान	१०
५—सुख (कविता)	१२
६—हीराकुल देवी जैन	१४
७—इन्द्रजी (१)	१७
८—विष्णु (कविता)	२२
९—इन्द्रजी (२)	२४
१०—इन्द्रजी इन्द्रजी (१)	२८
११—इन्द्रजी इन्द्रजी (२)	३३
१२—सत्य युद्ध (कविता)	३६
१३—सत्य युद्ध युद्ध	४०
१४—सत्य युद्ध	४३
१५—सत्य युद्ध कविता	४६
१६—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध	४८
१७—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध	४९
१८—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध कविता	५०
१९—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध	५१
२०—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध	५२
२१—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध	५३
२२—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध	५४
२३—सत्य युद्ध युद्ध युद्ध	५५

चित्र-सूची

चित्र	पृष्ठ
१—भरना	१३
२—बीराहुना देवी जीन	१४
३—गल दमयन्ती	२५
४—सर सैयद अहमद खाँ	२६
५—बीनारी का घर	२७
६—हवादार कमरा	२८
७—घड़ी	२९
८—बिहानाबाद डॉक्टर जगदीश चन्द्र दत्त	३४
९—बेतार के तार के आविष्कारों मार्कनी	३०६
१०—बेतार के तार के खन्ने	३०७
११—रेडन के कीड़े	३३०
१२—रेडन के डंक से बने बाँस हवाई जहाज़	३४०

■

■

बाला-बोधिनी

चौथा भाग



१-प्रभु का दर्शन

(१)

पूजन प्रेम नेप से जिनकी,
कल्पित-प्रतिमा का मैंने ।
रह कर पान किया था अपने,
पन-मन्दिर में ही मैंने ॥

(२)

आर्य-मुन्नी से मद्रा मुना ही-
था जिनका दम पावन नाम ।
यी अभिलाषा मद्रा कि देखे,
जिनकी मनुष्ट मूर्ति ललाम ॥

२-सत्यपरायणता (१)

महाराज हरिश्चन्द्र को मृगया खेलने का बड़ा चाव था । आपको जमी अपने राजकाज से अवकाश मिलता था, तभी मृगया खेलने के लिए चल दिया करते थे । हरिश्चन्द्र का यह दृढ़ सिद्धान्त था कि—

“चन्द्र, ठरै, मूरज ठरै,
ठरै जगत व्यवहार ।

पै दृढमत हरिश्चन्द्र को,
ठरै न सत्य विचार ॥”

अस्तु, इसी से लोग समझ सकते हैं कि वे कैसे दृढमति और सत्यपरायण हुए थे । एक दिन महाराज हरिश्चन्द्र आखेट खेलने के लिए वन में गये और एक बनेले मुअर का पीछा करते करते वे एक सघन वन में जा पहुँचे । वहाँ पर उन्हें किर्मा के बिलन्व बिलन्व कर रोने का शब्द सुनाई पड़ा । उन्हीं शब्द के आधार पर वे वंग में बढ़ कर उन्हीं स्थान पर जा पहुँचे । वहाँ में वह रोने का शब्द आ रहा था । वहाँ वे क्या देखते हैं कि एक जूँ की नन्दीभूति में कई एक बिपरीत एक पेड़ में बँधे हुए गे गे हैं । हरिश्चन्द्र को देखते ही वे कहने लगे कि महाराज हमारी रीति इस

इच्छा न पूरी हुई। इसलिए वे बोले कि इतने बड़े दान की दक्षिणा ७ करोड़ मोहरों अभी मिलनी चाहिए।

यह सुनकर महाराज हरिश्चन्द्र बहुत घबड़ाये। इस ऋण के चुकाने की चिन्ता ने उन्हें धर दबाया। उन्होंने सोचा—खजाने में इससे सैकड़ों गुना अधिक स्वर्ण भरा हुआ है; किन्तु वह तो मेरा है नहीं, क्योंकि मैं तो सर्वस्व दान कर चुका हूँ। बहुत देर तक सोच विचार करने के पीछे राजा ने कहा “महर्षि! आप मुझ पर दया करके मुझे एक महीने का समय दीजिए, जिसमें मैं परिश्रम से धन पैदा करके, इस ऋण से उद्धार हो सकूँ।”

विश्वामित्र ने राजा हरिश्चन्द्र को एक मास का समय तो दिया, किन्तु यह भी कह दिया कि जिस तरह हो तुमको एक महीने में दक्षिणा अवश्य ही देनी होगी। अब हमारे राज सिंहासन को छोड़ कर तुम्हारी जहाँ इच्छा हो, जाओ। इतना कह कर विश्वामित्र चले गये। इधर महाराज हरिश्चन्द्र ने भी महर्षि विश्वामित्र के आज्ञानुसार उसी रात को बिना किसी से कहे सुने, स्त्री पृत्र सहित, काशीपुरी की ओर चक्र दिये।

राजा हरिश्चन्द्र काशी में आकर बहुत दुर्ग्वी हुए। यथामन्य वेश्या करने पर भी वे मोहरों का कोई प्रबन्ध न

कर सके । अन्त में ऋण चुकाने की तिथि भी आ गई । छाचार महाराज हरिश्चन्द्र अपनी दूरी शैव्या को साथ लेकर काशी के बाजार की सड़कों पर घोंगिछा कर कहते जाते थे—“किसी को दास दामी मोल लेना हो तो लो ।” उस समय एक बृद्धे ब्राह्मण ने आकर तीन करोड़ मोहों देकर रानी शैव्या को मोल में लिया । जिस समय ब्राह्मण रानी शैव्या को लेकर चला, उस समय रामपुत्र रोहितार्य अपनी माँ को नहीं छोड़ना चाहता था और पल्ला पकड़ कर रोने लगा । उस पर शैव्या ने बड़ी दीनता के साथ उस ब्राह्मण से कहा—“बया आप इस बालक को संग में रखने की मुझे आज्ञा देंगे ? आपको इसके मोमनादि का मन्थन नहीं करना पड़ेगा । आप जो मुझे देंगे वह दोनों वसी में बँटना निराद कर देंगे ।”

ब्राह्मण ने वह बात स्वीकार कर ली और महारानी शैव्या दामी बन कर रोहितार्य को छिये गोपी हुई ब्राह्मण के आश्रय में पहुँची ।

इस महाराज हरिश्चन्द्र की बात बगद बाहरी व बदल्य मन का बाजार व इस तरह बचन व शिष्य विज्ञान ज्ञान मन्य वे वह बाल्याय न बाहर बाह बगद बाहरी १५५ ३२४ की बात में टिप्पणी

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—इस शब्दों के अर्थ यथास्थो—भुगया, दृढप्रतिष्ठ, आश्रय, दृढता और यथास्थाय ।

२—सायच दनाहो—साय. दित्तम दित्तम च २, निदादु करत्ता ।

६—“सत्यं नरि न सत्यं विचार ” ।

रघुनिर्मलित वारिषा वा ज्ञे हन् पाह के प्लाहि मे हं.
 वारिषा वारिषे ।

५.—विना शुद्ध मोक्ष विनाशे हे मं. काय करणे वा एका हेमना
मोक्षार्थे ? एक उदाहरण देकर समजावो ।

१-नव्यपरायणता (२)

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मसख होकर, साक्षात् भगवान् ने वहीं दर्शन दिये और अमृत द्वारा रोहित को भी पाण दान दिया ।

महाराज हरिश्चन्द्र का अद्भुत सत्यानुराग देख कर विश्वामित्र ने इनके राज्य को भी आशीर्वाद देकर लौट दिया । ऐसे भयानक समय में सत्य के पथ पर अटल रह कर महाराज हरिश्चन्द्र के सत्य की महिमा यह घोषणा कर रही है—“सत्य ही की विजय होती है ।”

अभ्यास के लिए प्रश्न

- १—इन शब्दों का अर्थ बताओ—धर्म-वरायण, धैर्य, दारुण और अनुमान ।
- २—इन शब्दों के मिश्र मिश्र अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो—‘चार’, ‘कर’ ।
- ३—‘जिसके पैर न फटे बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई’—इसकी विस्तृत रूप से समझाओ और एक उदाहरण दो ।
- ४—वाक्य बनाओ—मन डोल गया, एकलौता पुत्र ।

४—बड़ी वृद्धियों का सम्मान

आदमी के हाथ में मूँदा पाँच ही उँगलियाँ होती हैं ।
 ४२. क बार चार उँगलियों में बहुत एका हो गया । वे चारों

हर न रस्ते में लक्ष्य,
मान लिये जाने संदेश ?



संदेश लक्ष्य न रस्ते में
मान लिये जाने संदेश ?

बाधाओं से भिड़ भिड़ जाना,
हटना नहीं, नहीं भय खाना ।

पाठ तुम्हीं से सीखा भरना
कर्मक्षेत्र में बढ़कर मरना

अभ्यास के लिये मदन

१—भरने से हम क्या पाठ सीखते हैं ?

२—जयजेश, कर्मक्षेत्र, पथिकों का धर्म करा ।

६—वीराङ्गना देवी जोन

वीर बालिका जोन ने, आज से कोई ५०० वर्ष से पहले, फ्रांस देश के लॉरेन भाग के एक छोटे से गाँव डूमरिम में एक मामूली किसान के घर जन्म लिया था। उन दिनों फ्रांस की हालत दिन बदिन बिगड़ रही थी। फ्रांस निवासी ईर्ष्या के मारे एक दूसरे के रक्त के प्यारे होकर केवल आपस ही में न भगड़ते थे, वरन् कुछ छोटे अंगरेजों से भी ता पिले थे। अंगरेजों ने भी फ्रांस को ले लेने के लिए उम पर चढ़ाई कर दी थी ।

गम्भीर होने के कारण यद्यपि जोन को स्कूल में

पढ़ने का मौका नहीं मिला, परन्तु उसने घर पर ही अपनी माँ से सदाचार, धर्म और त्याग की अनूठी शिक्षा प्राप्त कर ली। बचपन में जोन की हालत अनोखी ही थी। वह अकेली बैठ कर घंटों तक बड़े चाव से हरी हरी घास, आकाश और पहाड़ों की मन को प्रसन्न करने वाली शोभा देखा करती थी। माता-पिता के बहुत कुछ कहने पर भी उसने क्वीरी रह कर अंगरेजों के हाथ से अपने देश को मुक्त करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था।

गर्मी के दिनों में एक दिन सन्ध्या समय जोन धर्म मन्दिर के बाहर खड़ी थी। उसके कानों में अचानक यह आवाज़ आई "जो तू बड़ी बीर है, तो जा अपने बादशाह को लेकर दुश्मनों से लड़। तेरे ही हाथ से प्रान्त स्वतन्त्र होगा।" फिर क्या था वह बट में घर पहुँची। उसने अपने माता-पिता से आकाशवाणी की चर्चा की और दुश्मनों के साथ लड़ने का विचार भी प्रकट किया। जोन का यह विचार सुन कर माता की बड़ी प्रसन्न हुई, परन्तु पिता ने उसे बहुत समझाया। जोन इन बातों में अपने दृढ़ संकल्प में कब हिलने-कलना थी। वह अपना घर छोड़ कर चाचा के घर जाकर रहने लगी। वहाँ से वह प्रान्त के अधिकार

‘डफ़िन’ के पास पहुँची और ईरान के भेजे हुए संदेश की चर्चा की और बहुत कुछ बहस के बाद ‘डफ़िन’ को अपने विचार से सक्षम कर लिया ।

फिर क्या था पहले पहल जोन शत्रुओं से लड़ने के लिए सेना ले आरलिनस नगर पहुँची । पहले तो उसने व्यर्थ की मारकाट बचाने के लिए उनसे मुलह करनी चाही, परन्तु अब वे मुलह करने पर राजी न हुए तो वीराङ्गना जोन ने उन पर हमला किया और अपनी वीरता से उनके दौत खट्टे कर दिये । इस बीच में एक सनसनाता हुआ बाण जोन की गर्दन में आकर लगा । जोन ने बड़े साहस से गर्दन से बाण खींच लिया और ज़ख्म पर रुद हो पड़ी बांध ली और फिर लड़ना शुरू कर दिया । उसने शत्रुओं से बहुत से किले वापिस ले लिये । इसके बाद पेरिस की लड़ाई में लड़ते लड़ते वह शत्रुओं के हाथ पड़ गई । उसके हाथ पैरों में लोहे की जंजीरें बांध कर हवालान में रक्खा गया । कभी कभी उसके हाथ पाँव लोहे के पिन्डे में बांधे गये, परन्तु वह अपने इरादे से हम से हम न हूँ ।

एक वर्ष तक कैद में रख कर ९ जनवरी सन १८३१ को जोन का मुकदमा शुरू हुआ । उस पर डाकिनी भी

र्म-भ्रष्ट होने का अपराध लगा कर उसे प्राणदण्ड की
माज्ञा दी गई ।

सचमुच वीराङ्गना जोन जैसी बालिकाएँ ही किसी
दश का गौरव स्थिर रख सकती हैं ।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ—ईषां, अनूठी, दृढ़-संकल्प,
स्वतन्त्रता, वीराङ्गना और आकाशवाणी ।
- २—‘रक्त के प्यासे, दांत खट्टे कर दिये, दस्त से मस्त न हुई’
इनके अर्थ बताओ और वाक्य में इनका प्रयोग करो ।
- ३—देवी जोन की कहानी सन्क्षेप में बताओ ।

७—गृहलक्ष्मी (१)

सावित्री अपनी मसुराल गई । वहाँ उसे घर का कुल
प्रबन्ध अपने ऊपर लेना पड़ा । घर का प्रबन्ध इतना गड़बड़
था कि घर के लोग सुन्व से निराश हो चुके थे । वे धीरे-
धीरे दरिद्र होते जाते थे । बेकारी और आलस्य के कारण
घर के बच्चे मे लंकर बृद्धे तक बिटचिड़े और मलिन
स्वभाव के हो गये थे । सावित्र के माता पिता ने पगाना

और बड़ा घर समझकर उसका विवाह बहाँ कर दिया था। सावित्री वहाँ पहुँचकर देखा कि गली गली भोज्य पात्रों में अब थोड़ी ही देर है। उसने अपने शरीर के सुख का विचार छोड़कर पहले घर के प्रबन्ध की ओर ध्यान दिया।

जिस घर का प्रबन्ध अच्छा होता है उसमें रहने वाले सुख पाते हैं और जिस घर का प्रबन्ध ठीक नहीं रहता उसमें रहने वाले रोगी, दरिद्र और आलसी बने रहते हैं।

इसलिये वह घर को सुखी बनाने में तत्पर हुई। वह बहुत मवेरें उठती थी। उसका सबसे पहला काम यह था कि दरवाजों और खिड़कियों को खोल देती, जिससे प्रकाश और शुद्ध वायु घर के भीतर आ सके। फिर बिछौने को लपेटकर धूप में रख देती। ऐसा करने से बिछौने अधिक साफ रहने हैं और उन पर सोने वालों को बीमारियों का होना ही नहीं है। इसके पश्चात् वह घर में झाड़ू लगाती। यह प्रति दिन का काम था। कुर्श पर कहीं कड़ा-करकट न रहने देती और दीवारों पर से भी जान्नों और धूल को झाड़ू देती थी। मसाह से दो एक बार कुर्श भी लोप डालती थी। झाड़ू सब जगह पर लगाती। ऐसा नहीं कि गुर्जा जगह से ना झाड़ू लगा दिया और ग्याट के नीचे पैरों ही पड़े रहने दिया। रंगी या चटाई जहाँ बिछौने होती, उनको उठाकर

भाड़ लेती और उस स्थान पर भाड़ लगाकर ज़रूरत होती तो उनको फिर वहीं बिछा देती थी ।

फिर बहरसोई-थर की ओर ध्यान देती । रसोई-थर की दीवारों को पहिले साफ़ करके, फिर धरती को चुटारकर, पक्की ज़मीन को पानी से धोकर और कच्ची को गोबर-मिट्टी से लीप डालती थी । वह पढ़ चुकी थी कि रसोई-थर को बहुत साफ़ रखना उचित है; आसपास कहीं गड़हे न हों जिनमें पानी जमा हो जाता हो और उसमें पड़कर चीज़ें सड़ जाती हों । क्योंकि इससे बीमारी फैलती है । शुद्ध और पवित्र स्थान में भोजन करने से मन बहुत प्रसन्न होता है ।

फिर उसने बरतनों की सफ़ाई पर ध्यान दिया । वह प्रत्येक बर्तन को माँजकर चमका देती थी । उनमें कहीं मैल न लगा रह जाता था । फिर उनको साफ़ पानी से धो डालती थी । अच्छी तरह माँजकर साफ़ किये हुए बर्तन में खाने-पीने से चित्त बड़ा प्रसन्न होना है । मैले-कुचैले बर्तनों को देखते ही घृणा आती है, उनमें खाने पीने से रोग पैदा होने का भय रहता है । वह बर्तनों को धोकर और पोछकर किसी शुद्ध स्थान पर रख देती थी ।

फिर घर की और चीज़ों की तरफ़ ध्यान देकर वह कपड़ों को उठाकर खंटी पर या अलगनी पर रख देती ।

वह खाने पीने का सामान कम से कम एक महीने के लिए एक साथ ही मैगाकर रख लेती थी । क्योंकि वह जानती थी कि रोज़ रोज़ खरीदने से दाम भी अधिक लगता है और बड़ा झुझट रहता है । गेहूँ, चावल, दाल, नमक, शक्कर, मसाला, घी और तेल आदि चीज़ें घर में वह सदा तैयार रखती थी । जिन जिन बर्तनों में चीज़ें रक्खी रहती थीं, उनको वह अच्छी तरह ढक देती थी । क्योंकि उनको खुला रख छोड़ती तो चूहे समाप्त कर देते ।

भोजन बनाने के समय भंडार-घर में से वह जो चीज़ें निकालती, उनको वह ज़मीन पर छिटकने नहीं देती थी । क्योंकि उनको खाने के लिए चूहे आ जायेंगे । जहाँ तक होता वह ऐसा उपाय करती कि घर में चूहे न रहने पावें । वह सोचती थी कि चूहे बहुत रोग फैलाते हैं । भंडार-घर में बड़ी स्वच्छता चाहिए । नहीं तो खाने पीने की सब चीज़ें मैली और गंदी हो जायेंगी । प्रतिदिन के खर्च में जो चीज़ें बच जाती, उनको संभाल कर वह भंडार-घर में रख देती थी । चीज़ों के रखने में वह इस बात का मदा ध्यान रखती कि जो चीज़ जहाँ की हो उसे उम्मी स्थान पर रखना चाहिए । ऐसा करने से चीज़ें जल्दी मिल जाती थी और काम का दर्ज भी न होता था ।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—वाक्य बनाओ—घिड़घिड़े होगा, मैले-कुचैले, कूड़ा-करकट ।

२—सावित्री घर की सफाई के लिए क्या करती थी ?

३—घर का प्रसन्न ठीक होने से क्या फल होता है ?

८—विद्या

विद्या सम गुण जगत में
 और न दूजा कोय ।
 सीखे तें जाके सदा
 अति अद्भुत सुख होय ॥ १ ॥

धन से विद्या-धन बढ़ो
 रहत पास सब काल ।
 देय जितो बाढ़ै तितो
 छीन न लेय नृपाल ॥ २ ॥

जो कोई सीखत नहीं
 विद्या चित्त लगाय ।

वह नर इस संसार में
 पसू सदृश हो जाय ॥ ३ ॥

विद्या धन उद्यम विना
 कहाँ जु पावे कौन ।

विना हुलाये ना मिलै
 ज्यों पंखा की पौन ॥ ४ ॥

सरस्वति के भंडार की
 बड़ी अपूरव बात ।

ज्यों त्वर्चे त्यों त्यों बढ़ै
 विन त्वर्चे घटि जात ॥ ५ ॥

विन विद्या के होय न बुद्धि ।
 मन की होती कभी न शुद्धि ॥ ६ ॥

विन विद्या नहि आदर पावै ।
 जीवन मर्भो व्यर्थ हो जावै ॥ ७ ॥

विद्या सम न त्रिपुर धन कोइ ।
 देव मिहान गुणी नन जोइ ॥ ८ ॥

विद्याहीन न मन मग पावै ।
 भूप मभा नहि मुजन कहावै ॥ ९ ॥

काम आने वाली चीज़ें और मसाले की शीशियाँ वह उसी पर रखती थी। कभी कभी भंडार-घर की चीज़ें निकाल कर वह उन्हें धूप में रख दिया करती थी और भंडार-घर को भाड़-बुहार कर और लीप-पोत कर साफ़ कर दिया करती थी। ऐसा करने से भंडार-घर की चीज़ों के बिगड़ने का भय नहीं रहता था। बरसात के दिनों में वह महीने में एक बार भंडार-घर की चीज़ों को धूप में अवश्य रख देती थी। जिससे सील के कारण उनमें कीड़े न पड़ जायँ।

खर्च की गुञ्जायश देखकर चौका-वर्तन के लिए उसने एक दासी भी रखवा लिया। वह प्रतिदिन उसके कामों की जाँच करती थी कि वह ठीक काम करती है या नहीं। परन्तु रमोड़े और भंडार-घर का प्रबन्ध वह अपने ही हाथ में रखती। दासी रखने से उसको जो समय की बचत होती थी उसे वह व्यर्थ न जाने देती थी। उस समय वह घर के बाल-बच्चों की सफ़ाई पर ध्यान देती, बच्चों को नहला पूजा कर साफ़ कपड़े पहना देती और उन्हें कुछ कलंवा करा देती थी।

घर की सफ़ाई से फुरमत पाकर स्नान करती और फिर भोजन बनाने में लग जाती थी। भोजन बनाने की कला में निपुण होने से वह थोड़े ही व्यय में बहुत स्वादिष्ट

भोजन तैयार कर लेती थी। घर के छोटे बड़े सब लोगों को खिला पिलाकर तब वह भोजन करती थी।

वह अपनी आय और व्यय का पूरा हिसाब रखती और मासिक आय में से महीने के अन्त में कुछ ज़रूर बचा लेती थी। वह जानती थी कि आय से अधिक व्यय करना गृह-प्रबन्ध में बड़ा हानिकारक है। ऐसा घर शीघ्र ही दरिद्र हो जाता है जहाँ व्यय अधिक और आय कम होती है। आय-व्यय का हिसाब प्रतिदिन लिखते रहना चाहिए। यदि आय कम हो तो भोजन के ऐसे पदार्थ माल लेने चाहिए जो कम दाम में मिल सकें। बहुत से भोजन के पदार्थ ऐसे हैं जो सस्ते भी हैं और पुष्टिकारक भी। कपड़े ऐसे बनवाने चाहिए जो मज़बूत हों और अधिक दिन तक चल सकें। मोटा सूती कपड़ा बड़ा उपयोगी होता है। घर के कामकाज से वह कुछ समय निकाल लेती और उस समय में मैले कपड़ों का स्वयं धो लिया करती थी, इससे धोबी को दिये जाने वाले पैसे बच जाने थे। जब वह घर के कामों में छुट्टी पाती, तब व्यर्थ न बैठी रह कर कुछ सीने धोने का या महीन कपड़ों में बेल घूँट काढ़ने का काम करती रहती थी। उसमें दिल-बहलाव भी होता रहता और कुछ धन का लाभ भी हो जाता था। अवकाश

के समय में वह घर के कपड़े आपही सी लिया करती, इससे दर्जों को दिये जाने वाले पैसे बच जाते थे । मतलब यह कि जिस तरह से आय अधिक और व्यय कम होता वह वैसा ही प्रबन्ध करती थी । जिस वस्तु की आवश्यकता न होती उसे वह कभी न खरीदती । वह घर के छोटे बड़े सब लोगों को प्रसन्न रखती । कोई खाने की नई चीज़ बनाती तो थोड़ा थोड़ा सब को देती ।

सावित्री ने लगातार परिश्रम करके घर के सब काम-काज को हाथ में कर लिया । उसे अब पहले के समान परिश्रम नहीं करना पड़ता । घर में स्वच्छता देखकर घर वालों के मन भी स्वच्छ हो गये । उनकी तुष्टी और स्वभाव का मैलापन जाता रहा । सब कुछ न कुछ काम करने लगे । सावित्री के मुँशील और मिलन-नार स्वभाव ने अड़ोसी पड़ोसी भी प्रसन्न रहने लगे । जहाँ पहले लोग उस घर की बग़्वादी का स्वप्न देखा करते थे, वहाँ अब सब उसका कल्याण मानने लगे । इस प्रकार सावित्री ने सब को सुखी करके अपना सुख प्राप्त किया ।

सावित्री ने अपने मङ्गुलों में एक इन्हने हुए घर को फिर सुख-मानि में पूर्ण कर दिया । उसके गुणों पर

मोहित होकर घर और गाँव के लोग उसे गृहलक्ष्मी कहने लगे ।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—(अ) इन शब्दों के अर्थ बताओ—निपुण, स्वादिष्ट और पुष्टिकारक ।

(ब) वाक्य बनाओ—गुडजाइश, अढ़ोसी-पढ़ोसी, घरवादी, दिल बहलाव ।

२—सावित्री के गाँव वाले गृहलक्ष्मी क्यों कहने लगे ?

३—सावित्री की कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

४—सावित्री की प्रतिदिन की दिनचर्या संक्षेप में अपनी भाषा में लिखो ।

१०—महारानी दमयन्ती (१)

विदर्भ देश के राजा भीमसेन की पुत्री का नाम दमयन्ती था । वह बड़ी सुन्दरी और गुणवती थी । जब वह विवाह योग्य हुई तब, उस समय की रीति के अनुसार, स्वयंवर रचा गया । दश देश के राजा उस स्वयंवर में उपस्थित हुए । उनमें निपथ देश के राजा वीरसेन के पुत्र

नल भी थे। नल बड़े वीर, धर्मात्मा और सुशील थे। दमयन्ती उनके गुणों की प्रशंसा पहले ही सुन चुकी थी। उसने स्वयंवर सभा में नल के गले में जयमाल डाल दिया।

निषध देश में आकर दोनों बारह वर्ष तक बड़े आनन्द से रहे। इसी बीच में उनके एक पुत्र और एक कन्या हुई।

राजा नल यद्यपि बड़े बुद्धिमान और धर्मात्मा थे, परन्तु उनमें एक दोष था कि वे जुआ खेलने के बड़े व्यसनी थे। इस जुआ खेलने के कारण उनको बड़ा कष्ट भी सहना पड़ा।

राजा नल के एक भाई और था, उसका नाम पुष्कर था। नल को राजा बना देत्व कर उसके मन में बड़ा द्वेष उत्पन्न हुआ। उसने नल को जुआ खेलने के लिए कहा। नल और पुष्कर जुआ खेलने लगे। हारते हारते राजा नल अपना सारा राजपाट हार गये। यहाँ तक कि वे अपने भरीर पर के गहने और कपड़े भी हार गये। केवल उनके पहिने की एक धोती बच गयी।

दमयन्ती बड़ी समझदार थीं। जुए में राजा को हारते देख कर उसने पहले ही अपने पुत्र और कन्या को अपने पिता

के घर भेज दिया था। पुष्कर ने नल को राज में से निकाल दिया। उसने नगर भर में यह दिशोरा पिटवा दिया कि नल को जो कोई अपने घर में ठहरने देगा, उसे प्राण-दण्ड दिया जायगा।

नल को जाते देख कर दमयन्ती भी राजमहलों में निकल कर उनके पीछे चली। नगर के लोग उन राज-रानी की यह दशा देख कर बहुत उदास हुए, परन्तु पुष्कर के डर से किसी ने उनसे बात भी न की।

राजा नल दमयन्ती के साथ तीन दिन-रात बिना खाये-पिये बराबर चलते गये। फिर एक वृक्ष के नीचे भूख-प्या से व्याकुल होकर वे बैठ गये। राजा नल ने दमयन्ती को बहुत समझाया कि “तुम अपने पिता के घर चली जाओ। परन्तु दमयन्ती ने रो कर कहा—“प्राणनाथ ! आप ऐसा क्यों कहते हैं ? आपका साथ छोड़ कर पिता के घर में मुझे सुख नहीं मिल सकता। मैं आपका मुख देख कर सब दुःख को भूल जाऊँगी।”

राजा ने कुछ उत्तर न दिया। दोनों भूख से व्याकुल वे और मार्ग चलते चलते थक गये थे। वे उसी वृक्ष के नीचे पड़ कर सो गये। दमयन्ती की आँखें तो

शीघ्र ही लग गई, परन्तु नल को नींद न आई। वे अपनी दशा पर चिन्ता करने लगे। वे बार बार रानी दमयन्ती के मुख की ओर देख कर लंबी साँस खींचते और आप ही आप कहते कि “हाय ! कोमल विछोने पर सोने वाली दमयन्ती आज काँवेदार भूमि पर सो रही है। आज तीन दिन से भोजन तक नहीं किया, केवल पानी पीकर पाण धारण किये हुए हैं। मुझ से दमयन्ती की यह दशा देखी नहीं जाती। यह मेरा साथ नहीं छोड़ेगी और मेरे साथ इसको भी वन के कष्ट भोगने पड़ेंगे। यदि मैं इसे छोड़कर चला जाऊँ तो यह अवश्य अपने पिता के घर चली जायगी। यह सोचकर राजा नल दमयन्ती को वहीं छोड़ कर चले गये।

जब दमयन्ती की आँख खुली तो वह नल को अपने पास न देख कर बहुत व्याकुल हुई। भटपट उठ कर उसने प्रकारना प्राग्भ किया—“ नाथ ! मुझे अकेली छोड़ कर आर कहीं चले गये, मैं बहुत प्यव्रता हूँ, मेरे साथ आरको ऐसी ईर्ष्या नहीं करनी चाहिये। हे महाराज ! शीघ्र आइए मुझसे आरका वियोग महा नहीं जाना मैं क्या अपनाय किया जो आर छोड़ कर चले गये ।

जब राजा नल न लाटे तब दमयन्ती फूट फूट व बिलाप करने लगी । दमयन्ती रोती बिलपती व भयानक जन्तुओं से भरे वन में घूमने लगी । पत्थर अँ काँटों पर चलने से उसके पैरों से रक्त बहने लगा । व झाड़ियों में जाने से उसके शरीर का चमड़ा कई स्था पर छिल गया ।

जिस वन में वह घूम रही थी, उसमें बड़े बड़े ऊँ पेड़ खड़े थे । चारों ओर हाथी, सिंह और रीछों का चिग्याह सुनाई देता था । चलते चलते दमयन्ती मुनियों के आश्रम में पहुँची । मुनियों ने उसे खाने के लिए फल दिये । दमयन्ती ने उनसे नल का पता पूछा, परन्तु मुनियों को नल का कुछ समाचार ज्ञात न था । तब दमयन्ती वन में चारों ओर घूम कर नल को ढूँढने लगी ।

कई दिन के पश्चात् उसे कुछ यात्री मिले जो सुवाहु नगर को जा रहे थे । दमयन्ती उन्हीं के साथ नगर में चली गई । वहाँ की रानी दमयन्ती को देखकर यह अनुमान किया कि यह किसी भले घर की स्त्री है, किसी के कारण यह मारी मारी फिरती है । रानी ने दमयन्ती को बुलाकर उसकी उस दर्दशा का कारण पूछा ।
(१५) ७ दमयन्ती ने अपना डीक डीक वृत्तान्त न बताया ।

ने उसको अपनी कन्या सुनन्दा के लिए नौकर रख
वा । दमयन्ती वहीं रहने लगी ।

जब राजा नल और दमयन्ती के वन जाने का समाचार
विदर्भ नगर में राजा भीमसेन के पास पहुँचा तब उन्होंने
को खोज लाने के लिए चारों दिशाओं में दूत भेजे ।
दूत सुबाहु नगर में आया और दमयन्ती को पहचान
वह उसे विदर्भ नगर में उसके पिता के पास ले गया ।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—प्रथा, व्यसनी और विपत्ति :

२—नीचे दिए हुए शब्दों को उचित स्थानों में भरो—

प्राणधारण, राजमहलों से, अनुसार, धर्मात्मा ।

उस समय की प्रथा के—स्वयंवर रचा गया : राजा

सुधिष्ठिर—और घोर थे : यह केवल—के द्विज भोजन

करती थी—रोने की आवाज़ आई ।

३—इस पाठ से तुम्हें प्राचीन विवाह-प्रथा के सम्बन्ध में
क्या पता चलता है ?

४—नल के कष्ट का क्या कारण था ?

५—जुआ खेलना क्यों बुरा है ?

११-महारानी दमयन्ती (२)

दमयन्ती को अकेली छोड़ कर नल कई दिनों तक उस वन में भटकते रहे। अन्त में घूमते फिरते वे अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ पहुँचे। नल रथ हाँकने की विद्या बड़े प्रवीण थे। राजा ऋतुपर्ण ने उनको अपनी अश्वशाला का प्रबन्ध-कर्ता बनाया। उस समय राजा नल की आकृति ऐसी बदल गई थी कि उनका बाष्पेव नाम का सारथी भी, जो उनके वन चले जाने पर अयोध्या के राजा के यहाँ सारथी हो गया था, उनको न पहचान सका। नल अपना नाम बाहुक रक्खा।

दमयन्ती नल के लिए रात दिन चिन्तित रहा करती थी। उसको उदास देख कर राजा भीमसेन ने नल को खोजने के लिए दूर दूर आदमी भेजे। उन आदमियों में से एक अयोध्या जा निकला। वहाँ उसने राजा नल को पहचान लिया। परन्तु नल अपना ठीक ठीक परिचय नहीं देते थे, इससे उसके मन में सन्देह बना ही रहा। उसने लौट आकर दमयन्ती से नल के रूप रंग और आकार का वर्णन किया। दमयन्ती ने निश्चय कर लिया कि वे ही राजा नल हैं। उसने अपने पिता से कह कर कहा कि राजा के पास निमन्त्रण भेजवाया कि "राजा नल का कुछ पता नहीं

है, इसलिये दमयन्ती अब दूसरा स्वयंवर करना चाहती है, अतएव आप शीघ्र हमारी राजधानी में आइए । ” निमन्त्रण लेकर एक ब्राह्मण अयोध्या गया । उस समय स्वयंवर की नियत तिथि इतनी समीप थी कि राजा ऋतुपर्ण किसी प्रकार भी विदर्भ नगर नहीं पहुँच सकते थे । परन्तु राजा नल ने कहा कि मैं ठीक समय पर आपको विदर्भ नगर में पहुँचा दूँगा ।

राजा नल रथ हाँकने की विद्या में बड़े निपुण थे । उन्होंने राजा ऋतुपर्ण को ठीक समय पर विदर्भ नगर में पहुँचा दिया । दमयन्ती ने अपने महल पर चढ़ कर रथ को देखा, परन्तु आपत्तियों के मारे राजा नल की मूरत ऐसी बिगड़ गई थी कि वह उनको अच्छी तरह पहचान न सकी ।

राजा ऋतुपर्ण रथ पर से उतर कर राजा भीमसेन से मिलने चले गये, और नल घोड़ों को अश्वशाला में बाँध-कर एकान्त में बैठ कर सोचने लगा कि स्त्रियों का स्वभाव बड़ा चञ्चल होता है । दमयन्ती अब मुझको बिल्कुल भूल गई । यह कैसे शोक की बात है कि आज मैं अपनी ममुराल में स्थित होकर आया हूँ और कल राजा ऋतुपर्ण मेरी रानी से विवाह करेगा ।

इधर दमयन्ती ने अपनी केशिनी नाम की दासी के नल के पास भेज कर पुछवाया कि तुम राजा नल को जानते हो ? केशिनी ने आकर उत्तर दिया कि वह तो बुद्धावदास बैठा है और कुछ उत्तर नहीं देता ।

तब दमयन्ती ने अपने दोनों बच्चों को केशिनी के साथ नल के पास भेजा । अपने बच्चों को देखते ही नल की आँखें भर आईं । परन्तु मुँह से उनसे कुछ न कहा । केशिनी ने यह समाचार दमयन्ती से कहा ; दमयन्ती ने अब कुछ निश्चय होने लगा कि यह सारथी ही राजा नल है ।

दमयन्ती ने अपनी माँ की आज्ञा से बाहुक को अपने महल में बुलवाया । जब नल दमयन्ती के सामने पहुँचे तो दोनों थोड़ी देर तक एक दूसरे को टकटकी बाँध कर देखते रहे । फिर दोनों ओर से करुणा का समुद्र उमड़ आया । दमयन्ती दौड़ कर नल के चरण पर छोटने लगी । उसने कहा—“श्राणनाथ ! आप ऐसी दासी को अकेली बन छोड़ कर चले गये, आपको कुछ दया न आई ।”

नल का गला भर आया और वे भी रोने लगे । परन्तु फिर कहने लगे—“मैंने इसलिए तुमको छोड़ा था कि तुमके हमारे साथ वन में भटकते फिरने में रुष्ट न हो । वास्तव में

तुमसे हमारा प्रेम कम नहीं हुआ। परन्तु देखता हूँ कि तुम्हारे हृदयमें मेरे लिए अब प्रेम नहीं है, नहीं तो तुम दूसरा विवाह क्यों करती।”

दमयन्ती ने हाथ जोड़ कर कहा—“ हृदयेश्वर ! ऐसी बात तो नहीं है। यह स्वयंवर का आहम्बर तो केवल आपके बुलाने के लिए ही किया गया है। मेरे हृदय में आपके लिए वैसा ही प्रेम है जैसा पहले था। मैं क्षण भर के लिए आपको नहीं भूली। आज बड़े आनन्द का दिन है कि आप के दर्शन हुए।”

नल के प्रकट होने का समाचार शीघ्र ही महल और नगर में फैल गया और चारों ओर बड़ा आनन्द मनाया जाने लगा।

जब राजा ऋतुपर्ण ने सुना कि हमारा सारथी बाहुक तो राजा नल थे तब वे उनके पास आकर कहने लगे—
हे राजन् ! मैंने आपको नहीं पहचाना। इस कारण आप के साथ जो सुझ से कभी दुर्व्यवहार हुआ है उसे क्षमा कीजिए मैं हुआ खेदने की विद्या में बड़ा प्रवीण हूँ। मैं आपको वह विद्या सिखा देता हूँ, आप फिर जाकर पृथ्वर में हुआ खेदिए आपकी अवस्था जीन होगी।

राजा ऋतुपर्ण ने राजा नल को जुआ खेलने की विद्या सिखा दी । फिर वे अयोध्या वापस लौट गये ।

राजा भीमसेन ने नल को बहुत सा धन, हाथी, घोड़े और रथ देकर दमयन्ती के साथ विदा किया । निपात नगर में पहुँच कर राजा नल ने पुष्कर के साथ फिर जुआ खेला ।

दिन सदा एक से नहीं रहते । सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता ही रहता है । इस बार पुष्कर हार गया । नल अपना राज-पाट जीत कर दमयन्ती के साथ मुरादाबाद से रहने लगे ।

नल ने अपने भाई पुष्कर को भी राज्य में बुलावा दिया ।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनका वाक्यों में प्रयोग करो—प्रसन्ध-कर्ता, आह्वति, ओखें भर आई, कदम का समुद्र डमड़ आया, गज्जा भर आया और आड़म्बर
- २—दमयन्ती के पाट में तुमको दमयन्ती के चरित्र की समझ में क्या ज्ञान होना है ?
- ३—दमयन्ती ने द्वितीय स्थयवर क्यों रचा था ?

४—राजा नल ने क्या दीप था और उनके उत्सके कारण क्या दुःख भोगना पड़ा ?

१२—समय चूकना

आछे दिन पाछे गये
हरि से किया न हेत ।

अब पछतावा क्या करे
जब चिड़िया चुग गई खेत ॥ १ ॥

काल करे सो आज कर
आज करे सो अब्व ।

पल में परलै होयगा
बहुरि करोगे कब्व ॥ २ ॥

का वर्षा जब कृपा सुत्वाने
समय चूकि पुनि का पद्वताने ॥ ३ ॥

आज कई कल्ह भजूंगा
काल कई फिर काल

आज काल के कल ही
ओमर नामी वाल :

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—शुद्ध रूप बनाओ—आहो, परलौ और कलह ।

२—अन्तिम हृद् का अर्थ बनाओ ।

१३—काम और आराम

दुनिया में बिना काम किये नहीं चलना और आराम भी नहीं मिलता । काम कर चुकने पर ही हमें आराम मिलता है । काम और आराम में घनिष्ठ सम्बन्ध है । इस कारण जो आराम चाहे, वह काम करने के लिए उत्सुक रहे और जब तक आन्न न हो जाय, तब तक काम करने में लगा रहे । जीवन की सफलता कार्य करने पर ही निर्भर है । जो शारीरिक या मानसिक कार्यों के करने में अज्ञान अथवा आलस्य वश, दुःख समझते और दिन भर खाली पड़े रहते हैं, वे मनुष्य अपने जीवन को व्यर्थ खोते हैं । जीवन की सफलता कार्यों ही में है । हमारा अस्तित्व ही कार्यों पर निर्भर है । जब तक प्राण है तब तक काम है । इससे जो काम नहीं करने, वे प्राणहीन हैं या जीने ही परे हुए हैं । ऐसे लोग इस अमूल्य मनुष्य जीवन का लाभ न स्वयं उठाते हैं,

न दूसरों को उनसे कुछ लाभ पहुँच सकता है। काम करने में हड़ता दिखाना मनुष्यत्व का लक्षण है।

काम करके सफलता का झुकुट प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। जो काम करने से डरते हैं वे कायर हैं, कायरता के प्रचारक हैं, नव समाज के लिए भार रूप हैं। इनका जीवन पशु जीवन से भी निकृष्ट है।

हमारे जीवन में काम दुःखदायी नहीं है। जिस समय कोई मनुष्य काम में प्रवृत्त होता है और जब तक काम में लगा रहता है तब तक उसकी एक अद्भुत आनन्ददायी दशा रहती है। हमारी चिन्ताएँ और जीवन के अनेक छोटे मोटे दुःख पाम नहीं आते और काम पूर्ण होने पर सफलता प्राप्त करके आनन्द और हर्ष प्राप्त होता है। किसी ने सत्य कहा है कि जो काम मेहनत से किया जाता है, उसके अन्त में बड़ा सुख मिला करता है। जिस समय हम काम में लगे रहते हैं उस समय यही ही सुझाँ किनारी जल्दी अपना चकर काटती मान्य होती है। परन्तु आलसी के लिए समय एक गीत के समान जान पड़ता है वह खाट में पड़ा पड़ा यही कहा करता है कि क्या करें दिन तो

न दूसरों को उनसे कुछ लाभ पहुँच सकता है। काम करने में हड़ता दिखाना मनुष्यत्व का लक्षण है।

काम करके सफलता का मुकुट प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। जो काम करने से डरते हैं वे कायर हैं, कायरता के प्रचारक हैं, नव समाज के लिए भार रूप हैं। उनका जीवन पशु जीवन से भी निकृष्ट है।

हमारे जीवन में काम दुःखदायी नहीं है। जिस समय कोई मनुष्य काम में प्रवृत्त होता है और जब तक काम में लगा रहता है तब तक उसकी एक अद्भुत आनन्ददायी दशा रहती है। हमारी चिन्ताएँ और जीवन के अनेक छोटे मोटे दुःख पान नहीं आते और काम पूर्ण होने पर सफलता प्राप्त करके आनन्द और हर्ष प्राप्त होती है। किसी ने मन्य कहा है कि जो काम मेहनत में किया जाता है, उसके अन्त में बड़ा सुख मिला करता है। जिस समय हम काम में लगे रहते हैं उस समय यही को सुझाई किन्ती जल्दी अपना चहर काटना चाहते होना है। अन्त आसानी के लिए समय एक गोल के समान जान पड़ता है वह स्वाद में पड़ा पड़ा यही कहा करता है कि क्या करे दिन तो

वैसे ही कोई कोई मनुष्य भी काम करने में दुःख समझते हैं ।

परन्तु जब मनुष्य को चेत होता है और वह उन पुरुषों की ओर देखता है, जिन्होंने इस संसार में अपना नाम अपने कामों से विख्यात किया है, तब उसे यह उपदेश मिलता है कि जो लोग अपना भला और लाभ चाहते हों वे दृढ़ता से काम करें ।

मानवजीवन दिन दिन कम हो रहा है और इसका अन्तिम परिणाम निस्सन्देह मृत्यु ही है । परन्तु मृत्यु के पश्चात् भी तो यहाँ के कर्मों का फल भोगना पड़ता है । इससे काम से कभी मुँह मत मोड़ो । संसार की सारी वस्तु काम न लेने से विगड़ जाती है । दूध जो गौ ने दिया है, यदि यथासमय उसे काम में न लाओगी तो विगड़ जायगा और स्वास्थ्य के लिए हानिकारी हो जाने से उसे फेंकना पड़ेगा । किसी वस्तु को अपने आप विगड़ने देना उचित नहीं है । अच्छा हो, यदि उससे काम न लिया जाय । धूल जैसे तुच्छ पदार्थ से हम अपना काम ले सकते हैं, फिर हमारा शरीर तो बड़ा मूल्यवाना है; इससे क्यों न यथाचित काम लें । अरस्तु ने कहा

कि मनुष्य से बड़ा कोई नहीं है और उसमें भी अमूल्य पदार्थ उमका मन है, परन्तु बेकार मनुष्य का मन ही उसका शत्रु है। यह इसको ऐसे ऐसे हानिकारी विषयों में और दुर्गमनों में फँसा देता है जिनसे मनुष्य को बड़े बड़े दुःख उठाने पड़ते हैं। प्यारी पात्रिकाओ, समय बीत रहा है, मनुष्य मर्फीर आ गयी है, ऐसे अवसर पर तुम्हें जो कुछ शुभ करने हो सो कर चलो।

काम और आराम साम हो पास रहने वाले बड़े मित्र हैं। काम करना बड़ा आवश्यक है, परन्तु उमकी अधिकता में हानि होती है। बच्चे को माता का दूध पीना गुणकारी है, परन्तु यह दूध भी अधिक पीने से बच्चे बहुत बीमार हो जाया करते हैं। हममें से बहुतरे अपने आपको बहुत ही उमी कारण से रोगग्रस्त बना लिया करते हैं कि अपनी शक्यता की आराम नहीं लेने देते। मनुष्यों को काम के साथ साथ आराम की भी आवश्यकता है। सम्भवतः मैं किया हुआ काम बड़ा दुःखदायी हुआ करता है। बाइनाइ गुलमान का कहना है कि जब काम है तब समय लाना है, एक समय काम करो तो दूसरा समय आराम करो। काम करने का यह से बड़ा हिकमत है कि काम कर चुकने पर, आराम

मिलता है। काम और आराम साथ साथ सफलता को ला देते हैं।

केवल आराम ही आराम भी बड़ा हानिकारी है। आराम से रहने के लिये यदि मनुष्य कुछ काम न करे तो वह कभी आराम से नहीं रह सकता—उसका स्वास्थ्य बिगड़ जायगा और पुष्टे तथा रंग बीली पड़ कर उसमें निर्बलता उत्पन्न कर देंगी। इस पर घनाढ्य मनुष्य को पूरा ध्यान रखना चाहिए। योरप के घनाढ्य पुरुष सदैव कुछ न कुछ काम किया करते हैं। इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री मि० ग्लेडस्टन हस्तों की काट छाँट किया करते थे और बड़े व्ययी थे। महुवि रानी मनुष्य को काम में लगा हुआ देख कर ही प्रसन्न रहती है। उसका उपदेश है कि हर समय कुछ न कुछ काम करते रहो, चाहे उस काम से तुम्हें आर्थिक लाभ हो या न हो। उसका पुरस्कार तुम्हें अवश्य ही प्राप्त होगा। काम से तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और वित्त प्रसन्न रहेगा। काम करने में आनन्द हो चाहे असफलता भी हो, परन्तु वह और उद्योगों से रहने में सकलता अवश्य प्राप्त होगी। तुम्हारा मानव-जाति सफलता का मार्ग ही के लिये है। अन्यो काम का सुझाव उस काम को अच्छी तरह

समाप्त कर देना ही है। हमारा जन्म मानो काम और आराम का निरन्तर उपयोग करने के लिए ही है।

मानव-जीवन अभिमानी राजाओं की कामनाओं को पूर्ण करने को तथा किसी लोभी पुरुष की तृष्णा को पूर्ण करने को तथा ऐसे ऐसे अन्य काम करने के लिए है, इसे हम भी मानते हैं, परन्तु धर्मानुष्ठान और पुण्यकार्यों के लिए तथा सद्गुण ग्रहण करने के लिए एवं अपने अ देश कार्य के लिए, अलम् है। सिकन्दर अनेक राज्यों को जीत कर भी सन्तुष्ट न हुआ और उसकी सदैव अन्य राज्यों को विजय करने की इच्छा बनी ही रह परन्तु तत्कालीन महात्मा पोप दायगोनीज़ चक्रवर्ती समान सन्तुष्ट था। ऐसा मालूम होता है कि यह मानव जीवन के सब सुख प्राप्त करके आनन्द में मान सिकन्दर एक दिन उस महात्मा के पास जाकर कह लगा—“दायगोनीज़ मुझसे कुछ माँगो।” महात्मा उत्तर दिया—“हमारे दासों के दास, तुझसे क्या माँगे? इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की है और उन्हें अपना बनाया, किन्तु सिकन्दर, तू मेरे दासों का दास इमान्दारी बना, तुझसे मैं क्या माँगूँ?” तृष्णा को मित्र अपनी इच्छा को शान्त करने, अपने इच्छानुसार

जोड़ने और कामनाओं को पूर्ण करने के लिए जीवन का समय अत्यन्त अल्प है, परन्तु धैर्यपूर्वक सत्कार्य करने के लिए हमारा जीवन यथेष्ट है। इससे जीवन में वे ही काम करने चाहिये, जो हमारे जीवन में पूर्ण हो सकें और उनका फल भी हम प्राप्त कर सकें।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बतलाओ—घनिष्ट, उत्तुक, अस्तित्व, मनुष्यत्व, निकृष्ट, समृद्धि, दुर्व्यसन, पाकस्थली, धनाढ्य और लक्ष।
- २—वाक्य बनाओ—शारीरिक, अनृत्य, मुँह मोड़ना, स्वर्गीय और निस्तन्देह।
- ३—काम और आराम दोनों की आवश्यकता क्यों है ?
- ४—सफलता प्राप्त करने के लिये किन किन बातों का होना आवश्यक है ?
- ५—प्रकृति ने क्या गिना मिलती है ?

१८—सुघड़ बेटी

बहुत बड़े बड़े इङ्ग्लैण्ड देश के समीपवर्ती राष्ट्र इंग्लैण्ड में एक लड़की मो लैंगडो कहकी ग्रैंड का जन्म हुआ।

समुद्र की लहरों ने ही ग्रीट के पिता के प्राण लिये थे और ग्रीट को लँगड़ी बना दिया था। अन्य बच्चों को खेलता देख बेचारी ग्रीट की आँखों से अश्रु-धारा वह निकलती क्योंकि लँगड़ी हो जाने के कारण वह उन बालकों के साथ खेलने में असमर्थ थी। इसके अतिरिक्त वह कभी कभी घोर कष्ट के कारण कई कई दिन तक विस्तरे पर पड़ी रहती।

एक दिन ग्रीट टाँग के दर्द से पीड़ित हो खिड़की के नीचे विस्तर पर पड़ी हुई थी। समुद्र की भयंकर लहरें खिड़की से टकरा रही थीं और इस समय बाहर की ओर देखना असंभव सा प्रतीत होता था। ग्रीट कमरे में चारों ओर ताक रही थी। देखती क्या है कि एक मकड़ी खिड़की के एक कोने में बड़ी चतुराई और फुर्ती से जाला बना रही है। मकड़ी की चतुराई देख कर ग्रीट हक्कीबक्की रह गई। देखते ही देखते पहले वर्ष सा सफ़ेद एक जाला बना और फिर सुन्दर छोटा सा पुनला। मानो वह पुनला मिर भुकाण धीमे स्वर से ग्रीट से कह रहा है—ग्रीट मुझे देखकर बुनना सीख लो।

ग्रीट बड़े ध्यान से मकड़ी का फुर्ती से जाला बुनना देखने लगी। थोड़ी देर में ग्रीट की माँ ने दरवाज़ा खोल

दिया । मकड़ी बाहर भाग गई । इस पर ग्रीट चौंक :
और बोली—अम्मा ! आपने बहुत घुरा किया जो
को भगा दिया ; मैं तो उससे बढ़ियाँ घुनाई सीख रही थी

अम्मा ने कहा बेटी ग्रीट ! क्या स्वप्न देख रही हो ?
तो दिन भर काम करती करती थक गई । ग्रीट ने
माता की इस बात का कुछ भी उत्तर न दिया और
रातभर मकड़ी की चतुराई पर मनन करती रही ।
काल ठठकर ग्रीट कलेवा किये बिना ही धुनने और
में जुट गई । एक दो दिन तक तो ग्रीट मकड़ी सा बारी
न कात सकी, परन्तु वह बारीक कातने का भरसक
करती रही । चर्खा घुमाते समय ग्रीट को यही ध्यान रहा
यानों मकड़ी धीमे स्वर से उसके कान में कह रही
कोशिश करो, कोशिश करो ।

मकड़ी के जाले को देख देख कर वह बढ़ बढ़ियाँ
कातना सीख गई । उन कात कर ग्रीट ने एक बहुत
ऊनी चदर तैयार की । इस चदर की चर्चा दूर दूर के लोगों
के कान तक पहुँची । चांगों ओर से लोग इस बढ़िया चदर
को देखने के लिए आने लगे । यहाँ तक कि समीपवर्ती
एक टापू की धनाढ्य स्त्री ने इस चदर को देखने के लिए
भेगाया । और फिर मोल लेने के लिए इच्छा प्रगट की ।

अपने इतने परिश्रम से तैयार की हुई चदर देने के लिए ग्रीट का चित्त न चाहता था, परन्तु माता के आग्रह करने पर विवश हो ग्रीट को चदर देनी पड़ी। ग्रीट को इस चदर का मूल्य एक सोने की मोहर मिली।

शेटलैंड के निवासियों को सोने का सिक्का देखने का यह पहला ही अवसर था। उन्होंने ग्रीट से चुनने और कातने का काम सीखने की इच्छा प्रकट की। ग्रीट बड़ी खुशी से टापुओं के रहने वालों को बढ़िया चदर तैयार करना सिखाने लगी। थोड़े ही दिन में केवल ग्रीट, उसकी माता और शेटलैंड टापू के रहने वालों के नहीं, बरन् आस-पास के टापुओं के निवासियों के भी अच्छे दिन फिरे।

शेटलैंड के निवासी उपरोक्त रीति से संसार भर में बढ़िया ऊनी चदर बनाने में सब से बढ़िया कारीगर बन गये। आज इस टापू के रहने वाले जितनी बढ़िया चदरें सुइयो से चुन डेते हैं, अन्य देशों के निवासी उतनी बढ़िया मर्गानों की सहायता से भी नहीं चुन सकते। यह क्यों ? कारण स्पष्ट ही है कि शेटलैंड की मादमा बालिका ग्रीट न यह कारीगरी बहुत पहिले ही मकड़ी से सीख ली थी।

जिस देश में ग्रीट जैसा मादमा बच्चा जन्म ले वह देश

यदि ऐसी आश्चर्यजनक उन्नति करे तो इसमें कौन
अचम्बे की बात है। साहसी और कर्मवीर लोग तो—

ढीकरो को बह बना देते हैं सोने की डली।

रङ्ग को कर के दिखा देते हैं बह सुन्दर खली।
बह बबूलों में लगा देते हैं चम्पे की कली।

काक को भी बह सिखा देते हैं कोकिल-काकड़ी।
ऊसरो में हैं खिला देते अनूठे बह कमल।

बह लगा देते हैं उकटे काठ में भी फूल-फल।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनका वाक्यों में प्र
करो—सर्पपक्षी, टूटे-फूटे, प्राकृतिक, प्रतीत, हकीकत
मनन काती और विषय।
- २—सुषुप्त घेरी की कथा संक्षेप में बताओ।
- ३—घोड़ की जीवन से क्या शिक्षा मिलती है ?
- ४—अग्निम हृन्त का अर्थ बताओ।

१५—नीति के दोहे

मयन मयन मायन रहें, दही मही बिलगाय।

रहिमन मोटे मोन हैं, नीर रने उहराय ॥ १॥

जिहि प्रसङ्ग दूपन लगै, तजिये ताको साथ ।
 मदिरा मानत है जगत, दूध कलारिन हाथ ॥ २ ॥
 जाके सङ्ग दूपन दुरै, करिये तेहि पहचानि ।
 जैसे माने दूध मव, सुरा अहीरी पानि ॥ ३ ॥
 दोष भरी न उचारिये, जदपि जथारथ बात ।
 कहे अन्ध को आँधरो, मानि घुरो सतरात ॥ ४ ॥
 नीच निचाई नहिं तजै, किताँ करै सतसङ्ग ।
 तुलसी चंदन विटप वसि, विष नहिं तजत भुजंग ॥ ५ ॥
 जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, का करि सकन कुसङ्ग ।
 चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजङ्ग ॥ ६ ॥
 सज्जन तजत न सुजनता, कीने हैं अपकार ।
 ज्यों चन्दन छेदै तऊ, सुरभित करत कुठार ॥ ७ ॥
 करै घुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय ।
 गोप पेड़ ववूर को, आम कहाँ ते होय ॥ ८ ॥
 दुर्जन के संमर्ग नैं, सज्जन सहत कलैस ।
 ज्यों गवन अश्वमेध नैं, बन्धन लखो जलैस ॥ ९ ॥
 पिछ्याभाषी मोच है, कहन न माने कोय ।
 भोड़ पुकारे पीग वम, भिम समुझन मव कोय ॥ १० ॥

उद्यम कबहुँ न छाँड़िये, पर आशा के मोद ।
 गागर कैसे फोरिये, उनयो देखि पयोद ॥१॥
 सब ते लघु है माँगियो, या में फेर न सार ।
 यलि पै जाँचत हो भये, वाचन तन कर्तार ॥२॥
 सब सों आगे होय कै, कबहुँ न करिये बात ।
 गुधरै काज समान फल, बिगरे गारी खान ॥३॥
 सेवक सोई जानिये, रहे विपति में संग ।
 तन छाया ज्यों धूप में, रहे साथ एक रंग ॥४॥

अभ्यास के लिये धरन

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ—भोर, प्रमद, सतरात, बिटा
 भुजङ्ग, सुगमिन, जलेम, मिस, मोद, उद्यम, उनयो
 पयोद, जाचन और धवगुण ।
- २—प्रयत्न हिन्दी में इनका रूप बताओ—ताको, तँ
 किता और चढ़े ।
- ३—शुद्ध रूप बताओ—जदगि, जघारघ, कलेम और जलेम ।
- ४—'कतो' और 'जानि' के अर्थ बताओ ।
- ५—नामों दाद का अर्थ बताओ ।
- ६—'दमव दाद म कय' जिन्हा मितना है

१६-सर सैयद अहमद खाँ

जाति और देश की उन्नति चाहने वाले बड़े लोगों में सर सैयद अहमद खाँ का भी नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। जिस समय यह पैदा हुए थे उस समय इनकी जाति की दशा अच्छी न थी। उसकी गिरी हालत को देख कर इनका दिल भर आया और ये सोचने लगे कि यह वही जाति है जिसने किसी समय अपनी विद्या-बुद्धि के प्रभाव से सारे पश्चिमी देशों को प्रभावित किया था, और वाणिज्य में भी सब देशों का अग्रगण्य था। इस समय उसी जाति की ऐसी गिरी हालत को मुझे, जिस प्रकार हो, शीघ्र ही सुधारना चाहिए, क्योंकि मैं भी उसी जाति का एक मनुष्य हूँ।

इनका जन्म १७ अक्टूबर सन् १८१७ ई० को दिल्ली शहर के एक प्रसिद्ध वंश में हुआ। इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। जब ये केवल सोलह वर्ष के थे तब इनके पिता मर गये। इतने ही समय में इन्होंने अरबी और फ़ारसी भली भाँति पढ़ ली थी। पिता के मरने पर ये सरकारी नौकरी ढूँढ़ने में लग गये। इनकी इच्छा और पढ़ने की थी, परन्तु वहाँ से महायत्ना न मिलने के कारण ये और अधिक वाः वाः चीं-चीं-५

न पढ़ सके। बाध्य होकर इनको पढ़ना-लिखना छोड़ना पड़ा। नौकरी कर लेनी पड़ी।

सन् १८३८ ई० में इनको सरकारी नौकरी मिली। और उस पद पर इन्होंने ऐसी योग्यता से काम किया सरकारी अफसरों ने खुश होकर इन्हें शीघ्र ही सारिदारो और उसके बाद सदर-आला के ऊँचे पद तक पढ़ा दिया। छत्तीस वर्ष तक नौकरी करके इन्होंने पेंशन ले ली और ये अलोगढ़ में आकर रहने लगे।

सन् १८५७ ई० में ग़दर के समय इन्होंने अंगरेजों बड़ी सहायता की। इसके बदले में सरकार ने इनके इनके बड़े लड़के महमूद के लिए दस दो सौ रुपये माँ की पेन्शन नियत कर दी। सन् १८६९ ई० में बिलायत गये और माय में अपने लड़कों को भी गये। इन्होंने बिलायत में अपने लड़कों को कानून शिक्षा दिलवाई। वहाँ से लौटने पर सर महमूद हाईकोर्ट के जज हुए और हाकिम मादव पुलिस के वरिष्ठ पद पर नियुक्त किये गये।

बिलायत जाकर जब सर मेयद महमूद स्वामी ने शिक्षा का अच्छा प्रचार देखा, तब उनकी यह इच्छा कि किसी तरह उन्हें भी अपना ज्ञान में शिक्षा प्रचार

गरीब मुसलमान लड़कों को पढ़ने में सहायता देकर उन्हें पढ़ा कर पहुँचा दिया। सर सैयद अहमद खाँ ने एक पुस्तक भी लिखी है जिसमें दिल्ली की इमारतों के चित्र दृष्ट हो रहे हैं और साथ ही इनका वर्णन भी है। आगे कलम में भी बड़ा जोर था। इनकी बातों को सारा लोग बड़े ध्यान और सम्मान से सुनते और मानते थे। उस समय आपका मान सरकार और मजा दोनों अच्छा था। सन् १८९८ ई० में आप इस दुनिया से चले कर गये।

पूर्वजों और अच्छे आदमियों के जीवन-चरित्रों को पढ़ने से हमारे चित्त पर अच्छा असर पड़ता है। हमारा चाल-चलन अच्छा हो जाता है और हमारी आदतें सुधर जाती हैं। लोगों ने अपनी उम्र का बहुत अंश जानि और देश की सेवा में लगाया है, हमें यह धर्म है कि हम उनके कार्यों का प्रशंसा करें और हमें सचिवांगों और मदगुणों को लेकर इस दुनिया में उनसे मिलने अच्छे काम करने हुए नाम पैदा करें। हमें चाहिए कि हम कम काम करें जिनमें हमारा, हमारे देश और देश-भाइयों का लाभ हो। नभी हमारा जन्म लेना सही कहा जा सकता है।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—नर सैयद इब्रहमद ने अपनी जाति के साथ क्या भजार्ई की थी उनका हाल संक्षेप से वर्णन करो ।
- २—उन्होंने सरकार की क्या सेवा की और उसका उन्हें क्या बदला मिला ?
- ३—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनको वाक्य में प्रयोग करो—
दिल भर आया, अच्छी आँखों ने देखना, क्लान में जोर होना, दुनिया में कूच करना, नाम पैदा करना, गौरव, अभ्यस्त और योग्यता ।
- ४—बड़े लोगों के उचित चरित्रों से क्या शिक्षा मिलती है ?

१७—बच्चों का पालन-पोषण

महकियों को बच्चों के पालन-पोषण की विधि अवश्य जाननी चाहिए, क्योंकि अगर वह कर उनके लिए यह बात बहुत उपयोगी होगी।

आजकल बहुत से बच्चे छोटी ही अवस्था में मर जाते हैं। इनका मुख्य कारण यह है कि माया-मानस उनके

गरीब मुमलपान लड़कों को पढ़ने में सहायता देकर जूँवों पर पहुँचा दिया। सर सैयद अहमद खान ने एक पुस्तक भी लिखी है जिसमें दिल्ली की इमारतों के चित्र हैं हुए हैं और साथ ही उनका वर्णन भी है। आप कलम में भी बड़ा जोर था। इनकी बातों को सब लोग बड़े ध्यान और सम्मान से सुनते और मानते थे। उस समय आपका मान सरकार और मजा दोनों अच्छा था। मन् १८९८ ई० में आप इस दुनिया से हट कर गये।

पूर्वजों और भ्रष्टे आदमियों के जीवन-चरित्रों पढ़ने से हमारे चित्त पर अच्छा असर पड़ता है। हम चाल-चलन अच्छा हो जाता है और हमारी आदतें सुधर जाती हैं। लोगों ने अपनी उन्नति का बहुत बड़ा भण्डार ज्ञान और देश की सेवा में लगाया है, हमें यह है कि हम उनके कायों का प्रशंसा करें और उनसे सीखें। हमें मद्रास और मद्रासों को लेकर इस दुनिया में उनके नाम अच्छे नाम करने हुए नाम पढ़ा करें। हमें यह है कि हमें काम करें जिनमें हमारा, हमारे देश का और हमारे देश का लाभ है। नही हमारा जन्म लेना सही कहा जा सकता है।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—सर सैयद अहमद ने अपनी जाति के साथ क्या भजाई की थी उनका हाल संक्षेप से वर्णन करो ।
- २—उन्होंने सरकार की क्या सेवा की और उसका उन्हें क्या बदला मिला ?
- ३—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनके वाक्य में प्रयोग करो—
दिल भर आया, अन्धरी आँखों से देखना, कलम पे जोर होना, दुनिया में कूच करना, नाम पैदा करना, गौरव, अग्रगण्य और योग्यता ।
- ४—बड़े लोगों के जीवन चरित्रों से क्या शिक्षा मिलती है ?

१७—बच्चों का पालन-पोषण

लड़कियों को बच्चों के पालन-पोषण की विधि अवश्य जाननी चाहिए, क्योंकि आगे चल कर उनके लिए यह बात बहुत उपयोगी होगी ।

आजकल बहुत से बच्चे छोटी ही अवस्था में मर जाते हैं । इसका मुख्य कारण यह है कि मायः मानार्थ उनके

चले जलाती हैं और कमरे के दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद कर लेती हैं। इससे कमरे की वायु बिगड़ जाती और उसी वायु में साँस लेकर बच्चा फूल की तरह मुरझा जाता है।

कुछ स्त्रियाँ ऐसी मलिन स्वभाव की होती हैं कि वे अपने बच्चों की सफ़ाई पर तनिक सा भी ध्यान नहीं देती। बच्चे मैले कुचैले बने रहते हैं, शरीर में फोड़े-फुन्सियाँ निकल आती हैं। आँखों की सफ़ाई न होने से उनमें रोग पैदा हो जाते हैं और कितने ही बच्चे तो माता की इसी असावधानी से अंधे हो गये। यह कितने आश्चर्य और दुःख की बात है कि माता का प्रेम बच्चे पर बहुत अधिक होने पर भी वह नीरोग और निरञ्जीवी नहीं हो सकता।

कोई कोई बच्चे सरदी लग जाने से मर जाते हैं। उनकी माँ ने उन्हें ऋतु के अनुसार कपड़े नहीं पहनाये इसी से उन बच्चों के प्राण मर चुके पड़े गये। कुछ बच्चे हानिकारक भोजन खाने के कारण मर जाते हैं। कुछ बच्चे बीमार होने पर इलाज न पाकर मर जाते हैं कि उनकी माममाँ माँ उनकी बीमारी का ठीक ठीक इलाज नहीं कर सकती क्योंकि वे भूत, प्रेत या नजर लग जाने

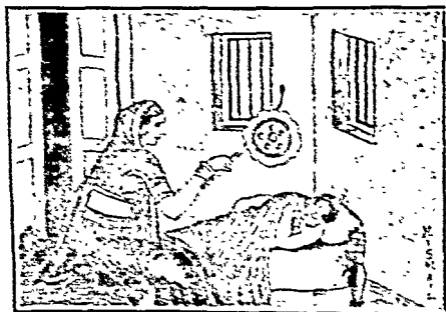
के धर्म में पढ़ कर बच्चे को नीरोग करने के लिए वैद्य या डाक्टर से सम्मति नहीं लेती और इसी में रोग बढ़ता जाता है ।

कुछ स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिए खिया दिया करती हैं, इससे भी उनका जीवन समाप्त जाता है ।

कहाँ तक कहें, बच्चों के पर्यष्ट पालन-पोषण की न जानने से आज प्रतिदिन सैकड़ों बच्चे मर रहे हैं । हम इस विषय की कुछ मुख्य मुख्य बातें ब्रिटेन लड़कियों को अब कभी बच्चों के पालन-पोषण का करना पड़े तब उनको इन बातों पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिये ।

बच्चों को ऐसे स्थान में रखना जहाँ की वायु शुद्ध और जहाँ न अधिक गर्मी हो और न अधिक गर्मी । न सोना जग न बच्चे मुँह को कपड़े में न डको । न गरम पानी हो उसमें भाग घन जल्लाभो और न दीप्त का हा हात पर जलन हो इसमें वायु बिगड़ जाती है । बच्चे का हा हात पर जलन हो इसमें वायु बिगड़ जाती है । बच्चे का हा हात पर जलन हो इसमें वायु बिगड़ जाती है । बच्चे का हा हात पर जलन हो इसमें वायु बिगड़ जाती है ।

है। प्रत्येक कमरे में छत के पास दीवार में एक छेद होना



दुबारा कमरा

चाहिये, जिसमें से होकर वायु और प्रकाश कमरे में बराबर आने रहे

बच्चों का पैदा होने का भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि उनके लिए परमेश्वर ने रहने की से भोजन तैयार कर रखा है। कुछ दिनों तक माता का दूध ही पी कर वे आगम से रह सकते हैं।

उसमें रोग पैदा हो जाते हैं। बच्चे को नहला कर कपड़े से उसका शरीर पोछ डालना चाहिए। क्लिष्ट का शरीर शुद्ध नहीं रहता, उनको सदा पसि धरे रहती हैं, उनको मोद में लेने से घृणा होती है। स्वच्छता न रहने ही से बच्चों को नाह लगती है।

बच्चों के पहनने के कपड़े सदा शुद्ध रहने चाहिए। उनके कपड़े बहुत कसे हुए नहीं होने चाहिए। उनके अंगों के बढ़ने में बाधा पड़ती है, और कपड़े ढीले भी न हों कि बच्चे के हाथ पाँव हिलाने से फँस

जब कपड़े पेशाब से भीग जायें तब उन्हें शीघ्र डालना चाहिए। ऋतु के अनुसार मोटे और महीन बच्चों को पहनाने चाहिए।

छोटे बच्चों को उनके इच्छानुसार अधिक सोना चाहिए। सोने के लिए भफीम मिष्ठाना अत्यन्त ही है। यह निश्चय समझो कि बच्चे को जब कोई ब है, तभी उसे नाह नहीं जानी। अनप्य भफीम न कर उसका बच्चा दूर जाने का प्रयत्न करना अच्छा है। बच्चे का भी नहीं जगाना चाहिए। शानि शानि है बच्चे का बिजाने पर निश्च जेरा रा

उसे खाया पिया पदार्थ शीघ्र पच जाता है। बच्चों का बिछाना स्वच्छ होना चाहिए।

बच्चा जब चलने फिरने लगे, तब उसे खूब खेलने कूदने देना चाहिए। जो बालक खेलता कूदता नहीं बढ सुस्त और रोगी बना रहता है। बच्चों से छोटे छोटे काम भी कराते रहना चाहिए। काम कराने से वे बड़े प्रसन्न रहते हैं। बच्चों के साथ खेलना, हँसना और बातें करना बहुत अच्छा है, इससे उनको बड़ा आनन्द आता है। जो बालक प्रसन्न रहते हैं वे ही नीरोग रहते हैं।

यदि किसी कारण से बच्चा बीमार हो जाय तो उसे चुपचाप पड़ा रहने देना चाहिए और शीघ्र ही किसी अच्छे वैद्य से मन्मथि लेकर उनको दवा देनी चाहिए। बहुत सी ग़ियों बच्चों की बीमारी को भूत प्रेत या नज़र का लग जाना समझ कर मूर्खों में भ्रांति फैला दियाया जाती है, यहा बड़ी मूर्खता की बात है। हमसे बच्चों की बीमारी घटने के लिये बच्चा ही स्वस्थ हो बच्चों का कभी रोने देना नहीं चाहिए।

बच्चों का दूध पीकरी या भैंस-मैकरी या दूध मरहो के दाम कभी बेचन न देना चाहिए। न तो उनका हँस बनने देना चाहिए और न भूत बीमारी मारवने देना

चाहिए । बच्चों में ऐसी आदत डालनी चाहिए कि वे अपने माता पिता के आज्ञाकारी हों ।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ—विधि, प्राणघातक, ईश्वर-पावन-शक्ति और इच्छानुसार ।
- २—इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो—तनिक, तीव्र, निरज्वरी, सम्मति, हानिकारी, सुपचाप ।
- ३—बच्चों के पावन-पापण में किन किन बातों को वे विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ?
- ४—बच्चों की बोधनी में क्या करना चाहिए ?

१८—पति को सेवा का उपदेश

धनमूया के पद गदि मीना ।
 पिनी बगदि समीन विनीना ॥
 रूपि पत्नी धन मुख अविनाटे ।
 रमिप रीन निवट बडाटे ॥ १ ॥
 इह रूपि बहू मरु मरुना ।
 नरि मरु बहू न्यान बग्यानी ॥

मातु-पिता-भ्राता दिनकारी ।
मित्र सुख-भद्र सुनु राजकुमारी ॥ २ ॥

अमित दान भरता वैदेही ।
अथम सो नारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धरम मित्र अरु नारी ।
आपद काल परलिये चारी ॥ ३ ॥

वृद्ध रोग-वत्त जड़ धन हीना ।
अंध बधिर क्रोधी अनि दीन ॥
ऐसेहु पति कर किय अमान ।
नारि पाव यमपुर दुख नान ॥ ४ ॥

एक धर्म एका व्रत एक
बाप बचन मन पति एक ॥
जग पतिव्रता चार सिद्धि अरु
बड़े दरान मन मरि अरु ॥ ५ ॥

राम कृष्ण बल नर अरु
महाराज अरु राजा अरु अरु
राम कृष्ण बल नर अरु
महाराज अरु राजा अरु अरु

धर्म विचारि तमूकि कुल रहै ।
 ते निहृष्ट निष मुनि अस कहै ॥
 विनु भयवर मय ते रह सोई ।
 जानेहु भयव नारि जग सोई ॥ ७ ॥

विनु भय नारि परम गति मरई ।
 पतिव्रत परम छाँदि छल गइ ॥
 पति मतिहूय जनमि जई जाई ।
 विपदा होय पाय तदनाई ॥ ८ ॥

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ—गहि, विनीता, ब्यात्र, दित कारी, सुखप्रद, अमित, अधम, आपदकाळ, वधिर अपमान, कार्य, पतिव्रता, निहृष्ट, प्रतिहूय, सो तदनाई ।
- २—वर्तमान हिन्दी के रूप बताओ—भरता, पगलिये, धरम छाँदि और जनमि ।
- ३—नामरे छन्द का अर्थ बताओ ।
- ४—अनमूया जी ने माँता मा का क्या उपरज किया था इसे संक्षेप में बताओ ।

१६-जोधपुर नगर

जोधपुर राजधानी के बड़े और मजिद देशी राज्यों में परिगणित किया जाता है। मध्यम राज्य का प्राचीन नाम मर्देश अर्थात् रेगिस्तान देश अथवा मारवाड़ है। जोधपुर इसी मर्देश की राजधानी और प्रधान नगर है। जोधपुर नगर को बसे हुए काही समय हुआ है। इसकी नींव सन् १४५८ ई० में जोधा जी नामक एक राठौर वंश के मजिद वंश में रखी थी। उससे पूर्व राज्य की राजधानी मर्देश नाम के नगर में थी, जो वर्तमान जोधपुर से ६ मील की दूरी पर है। वहाँ पर मर्देश के पुराने राजाओं के देवाल अथवा स्मारक-भवन अब तक विद्यमान हैं। इनके अतिरिक्त प्रदेश में प्राचीन दुर्ग के अवशेष भी हैं। प्रदेश होने भी एक ऐतिहासिक स्थान है। मर्देश के मध्य का १२ की जलवायु का एक विशेषता है। वहाँ प्रायः इसी प्रकार के अनेक अन्य अन्य स्थानों का अन्य मजिद मध्य विद्यमान है।

[illegible]

पर मंदोर नामक प्राचीन मरुदेश की राजधानी है जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है ।

यहाँ पर, जैसा कि अभी कह चुके हैं, जोधपुर के राजाओं, तथा रानियों की स्मृति में मन्दिर से बने हैं जिनके बाहर उनके जन्म-मरण आदि के सम्वत् दिये हैं ।

इसके सिवाय यहाँ एक बड़ा बाग़ है, जिसके अन्दर ग्रीष्म की दोपहर में भी शीतल छाया रहती है । श्रावण के महीने में दो सोमवारों को यहाँ मेले लगते हैं, तब यहाँ ठसा-ठस भीड़ होती है । मेले के दिनों में जोधपुर से मंदोर तक कई स्पेशल ट्रेनें आती जाती हैं ।

मंदोर के बाग़ में एक पहाड़ी-भाग है जिसे काट कर अनेक राजपूत वीरों तथा देवी-देवताओं की मूर्तियाँ गढ़ ली गई हैं ।

जोधपुर में भी कई स्थान देखने योग्य हैं । शहर कम से कम ६ मील के बीच में बसा है । बीच में कुछ भागों में पहाड़ियाँ भी आ गई हैं । पश्चिम की ओर एक पहाड़ी प- जोधार्जी का बनवाया हुआ किला है । उर्मी के नीचे से बस्ती आरम्भ हो जाती है । शहर के कुछ भाग, जो प्राचीनतर है, अधिक घने हैं । बीच-बीच में कई पक्के

कई मील तक चली गई हैं। वहाँ से पूर्व की ओर दो मील पर राज्य के उच्च कर्मचारियों के आवास हैं। वहाँ पर अंग्रेजी सरकार के प्रतिनिधि रेज़िडेंट की कोठी है। राज्य की कचहरियाँ, दफ्तर, कालेज, स्कूल, रेलवे-स्टेशन तथा राजभासाद भी इसी सड़क पर हैं।

जोधपुर जाने वाले यात्री को क़िला, गिर्दी-कोट बाज़ार, अजायबघर तथा चाँदपोल—यह मुख्य मुख्य चीज़ें अवश्य देखनी चाहिए।

क़िला शहर की एक सीमा बनाता है। ६०० फ़ीट के लगभग ऊँची पहाड़ी पर वह स्थित है। ऊपर क़िले तक पहुँचने के लिये सुडौल रास्ता बना दिया गया है। मोटर, रॉगे आदि का पय अलग बना है। क़िले के भीतर सीलाख़ाना, मोतीमहल, जवाहरख़ाना विशेष रूप से देखने योग्य हैं। सीलाख़ाना में सैकड़ों प्रकार की ढालें, तलवारें, बन्दूकें, भाले तथा कवच रक्खे हैं। उन पर सोने चाँदी की बड़ी अच्छी कारीगरी है। इसके मित्राय वे इतने भारी हैं, कि माथारूप बल वाला पुरुष उन्हें मरलना से उठा तक नहीं सकता, उनका प्रयोग करना तो दूर की बात है।

मोतीमहल में मोने चार कमरे हैं, जिनकी दीवारों तथा छतों पर मोने की अनुरूप कारीगरों हैं।

यहां भी किले से कुछ उत्तर की ओर हट कर ऊँ पहाड़ी पर है। यह संगमरमर पत्थर की इमारत है। गिरीशनाथ के अन्तिम भाग में यशवन्तसिंह नाम के प्रसिद्ध के पुर नरेश हो गये हैं, उनका समाधि-स्थान इसी यड़े में नितने राजा स्वर्गवासी होते हैं, उनकी समाधि इसी के दी जाती है।

यहां एक अन्यन्त भव्य भवन है। यह एक ऊँचे चौड़े चबूतरे के ऊपर निर्मित है। पास ही एक छोटी हरी-भरी झरनी और कुलवाड़ी है। उसके मध्यभाग में फुलारा है। चारों ओर संगमरमर की चौकियाँ पड़ी हैं, पर बैठ कर दर्शकगण वायु सेवन करते हैं।

यड़े के पीछे एक मरोवर है, वहाँ तक सीढ़ियाँ गई वर्षा-ऋतु में यह स्थान परम रम्य बन जाता है।

गिरीकोट बाजार शहर के मध्य भाग में एक प चौक में है, तिमके दो फाटक हैं। इसके बीचों बीच एक रास्ता पड़ है, और आम आम दुकानें हैं। जो का एक प्रतापबहादुर का भवन इन का चन्दा है। इन पर्वों बहुत उग नग दृष्य। दिन दिन इसकी लोकोत्तरी है। इसमें भी उत्तर पारवाद के कला-क क नमन है। एक विद्यमान भी है, तिमके चित्रों

संग्रह काफी अच्छा है । इसके सिवाय अजायबघर में पुरातत्व विषयक विभाग भी है, जिसमें सैकड़ों विभिन्न प्रान्तों से लाई हुई प्राचीन मूर्तियाँ तथा शिला-लेख एकत्रित किये गये हैं ।

चाँदपोल जोधपुर शहर के एक मुहल्ले का नाम है, जो एक पहाड़ी पर स्थित है । वहाँ जाते समय शहर का घना मध्य भाग पार करना पड़ता है । यहाँ द्रष्टव्य बात यह है कि वहाँ एक ऐसी सड़क से जाना होता है जो बक्राकार हो कर क्रमशः अत्यधिक ऊँचाई पर पहुँचाती है । ऊपर से शहर का दृश्य बड़ा सुन्दर देख पड़ता है । रात्रि में जब शहर भर में बिजली के लैम्प जल जाते हैं, तब वहाँ से दीपावली सी देख पड़ती है, एवं चतुर्दिक मरुभूमि से परिवृत्त होने पर भी जोधपुर कतिपय प्राकृतिक सुविधाओं के कारण उस शुष्कता से मुक्त है, जो अन्य इसी प्रकार के स्थानों में रहती है ।

वास्तव में यहाँ की वायु में नर्मता अथवा शुष्कता तो अवश्य है, किन्तु यहाँ के 'नवा'ओं का मनम हृदय है । गान-विद्या, चित्रकारा, हस्त-कौशल तथा अन्य साहित्य-कलाओं की ओर लोगों की अच्छा प्रवृत्ति है । प्राचीन काल में जिस वीरता के लिए राजपूताना देश भर में विख्यात था, उसके

अनगद अंकुर राजपूतों में अवश्य विद्यमान हैं पर परा ।
 बल-पीला अब स्त्री-जाति में चला गया है । स्त्रियों के बीच
 चित कायों के वृत्तान्त अब भी सुनने में आ जाया करते ।

अन्त में, यह कहा जा सकता है कि पर्यटक के प
 विनोद की जोधपुर में पर्याप्त सामग्री है ।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—जोधपुर का वर्णन संक्षेप में करें ।

२—यहाँ कौन से स्थान विशेष दर्शनीय हैं ?

३—जिखन का अभ्यास करें और व्यर्थ मत छोड़ें :—

परिचालन, स्मारक, आभूषण, शुभक, प्रशस्तिपत्र, आ
 पुरातत्व और स्वेच्छा के ।

४—वाक्यों में प्रयोग करें :—

जेल देत, माल देत, खाना देत, पहना देत, कला देत
 क मनुते है । वाक्यों में भी देत मनुते है ।

५—मात्रा लिखें, माल देत, पहना देत, कला देत का संक्षेप में

२०—शिक्षा की आवश्यकता (१)

एक ही महल्ले और एक ही घर में रहने वाली बहुत सी लड़कियों के स्वभाव भिन्न भिन्न होते हैं। इसका कारण क्या है ? दो बहनों में एक की लोग प्रशंसा करते हैं और दूसरी की निन्दा, इसका क्या कारण है ? तुम्हारे महल्ले में जो श्यामा नाम की लड़की रहती है उसकी सभी बड़ाई करते हैं। उस दिन दो तीन स्त्रियाँ आपस में बातें करती थीं और कहती थीं कि श्यामा तो लक्ष्मी है। परन्तु मनोरमा की बड़ाई कोई नहीं करता। इसका कारण क्या है ? न तो श्यामा किसी को कुछ देती है और न मनोरमा किसी से कुछ छीन ही लेती है। तो भी लोग श्यामा पर इतने प्रसन्न और मनोरमा पर इतने अप्रसन्न क्यों रहते हैं ?

एक दिन मनोरमा की माँ उससे बिर्ही हुई थी और उसे झिड़कियाँ देती हुई कह रही थी कि देख तो, श्यामा कैसी अच्छी लड़की है, महल्ले में चारों ओर उसकी बड़ाई हो रही है। तू उसे काली कहती है और अपने गोरों चमड़े पर फुला रहती है। मैंने तुझे बार बार समझाया कि गोरा चमड़ा कोई चीज नहीं, गुण सब से अच्छे हैं। जिसमें गुण नहीं हैं वह गोरी हुई भी तो उसके

गोरी होने से किसी को क्या लाभ हो सकता है ?
 इन बातों को सुन कर प्रसन्न नहीं हुई । वह बिदूषा और
 अपनी माँ से रुठ कर किसी दूसरी जगह चली गई ।

मनोरमा की माँ की बातों से मान्य हुआ कि इसका
 की प्रशंसा इसलिए होती है कि उसमें अच्छे गुण हैं, और
 मनोरमा में अच्छे गुण नहीं हैं । इस कारण उसकी निन्दा
 होती है ।

लोगों का विश्वास है कि अच्छे गुण पूर्वजन्म
 संस्कार से मिलते हैं । क्योंकि बहुत से अच्छे पदों
 लड़कियों में अच्छे गुण नहीं होते और बहुत से छोटे
 की लड़कियाँ गुणवती होती हैं । परन्तु तुम लड़कियों
 को ऐसा नहीं समझना चाहिये । अच्छे गुणों के होने
 दो कारण होते हैं, एक तो अच्छी संगति और दूसरा
 अच्छी शिक्षा ।

अच्छी संगति सब को नहीं मिल सकती, नि
 अच्छी शिक्षा पाने में किसी का कुछ भी रुकावट नहीं
 अच्छी संगति में उन्हीं में अच्छे गुण आ सकते हैं नि
 अच्छी संगति पाने का प्रयत्न है । जिन्हें अच्छी स
 पाने का प्रयत्न नहीं किया व बिचारी गोरी निर्गुण

बनी रह जाती हैं। अतएव पढ़ना चाहिए, पढ़ने से सबको अच्छी शिक्षा मिलती है और गुणवती बनने का अवसर मिलता है। देखा गया है कि जो लड़कियाँ बहुत बुरी समझी जाती थीं, उनसे कोई बोलता भी न था, परन्तु पढ़ने ही से वे बड़ी गुणवती हो गयी हैं। इसी कारण हम भी कहते हैं कि तुम सब पढ़ो और गुणवती बनो। जिससे लोग तुम्हारी भी बड़ाई करें।

पुस्तकों को रट लेना ही पढ़ना नहीं है। किसी ने पुस्तकें रट लीं, इससे उसको कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। पढ़ने का मतलब यह है कि पुस्तकों में लिखी हुई अच्छी अच्छी बातें जाने और उन्हीं के अनुसार काम करे। भली बातें सीखे और बुरी बातें छोड़ दे, इसीलिए लोग पढ़ते हैं। जिनसे पढ़ लिख कर ये बातें न सीखीं उसका पढ़ना और न पढ़ना दोनों बराबर है।

पढ़ने में दो बातें सामने आती हैं, एक तो अच्छे अच्छे गुणों से होने वाले लाभ और दूसरे बुरी आदतों से होने वाली हानियाँ जो वह इन अच्छे गुणों को सीखती है और बुरी आदतों को छोड़ती है उन्हीं का प्रयत्न होना है, सब लोग उन्हा का आदर्श बनते हैं।

धनता, भितव्यय, सहनशीलता, उदारता, प्रेम आदि

गुण यों तो सभी के लिए लाभदायक हैं, परन्तु बालिकाओं के लिए इन गुणों की आवश्यकता है ।

किसी पर तुमको क्रोध आया, तुम उससे झगड़ लगीं । अब तुमसे और उससे विरोध हो गया । वह मर्दा यही बात सोचा करेगी कि किस तरह तुम्हारी हानि होगी, तुम भी उससे झगड़ करने लगोगी । किस तरह उसकी हानि होगी यही बात तुम्हारे हृदय को दिन-रात टिलाया करेगी । तुमको और उसको दोनों को अच्छी अच्छी बातें सोचने का अवसर नहीं मिलेगा ; न अच्छे कामों के करने का, किन्तु दिन रात अपने विरोधी को नोचा दिखाने का प्रयत्न हो रहेगा । वह तुम्हारी पुराणियाँ अपनी मलिनियों से कोंटें और तुम उसकी पुराणियाँ अपनी मलिनियों से । इसका फल बड़ा मर्यादक होता है । दलबन्दी हो जाती है । विरोधों के अच्छे अच्छे गुण भी विरोध बन छिपाये जाते हैं, उन्हें अच्छे गुणों पर यही दालने का प्रयत्न किया जाता है तुम्हारा हृदय कटुचित्त हुआ और उसका भी हृदय कटुचित्त हुआ दिन रात बिना बना रहता है । सोचो ! यों प्रत्येक मनुष्य की हानि हो जाती है । यदि तुम उसका भय का दृष्टि से न देखो प्रयत्न प्रयास के बिना करने का प्रयत्न न करो हृदय पर तुम्हारी मर्दा

का अधिकार हो जायगा। वह तुमको देवी समझने लगेगी। वह तुम्हारी हो जायगी, तुम्हारे कहे अनुसार वह काम करने लगेगी। अब तुम उसके दोषों को भी दृष्टा सकती हो और उसके द्वारा और भी काम पूरा करा सकती हो। ध्यान से देखो, क्षमा कैसा अच्छा गुण है। इससे कितने लाभ होते हैं।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ और उनको वाक्यों में प्रयोग करो—संस्कार, विरोध, उदारता, दलबन्दी, हृदय हिलाना और गुलों पर पर्दा डालना।
- २—कुछ लोगों का ख्याल है कि अच्छे गुण पूर्वजन्म के संस्कार से मिलते हैं, क्या यह ठीक है ?
- ३—अच्छे गुणों के होने के लिए किन दो कार्यों का होना आवश्यक है ?
- ४—‘सदा पुनरङ्गं को रश्मि मेना ही पदना कहा जा सकता है ?

उँ लड़ाई अन्त, अन्त में मुल्ह हुई दोनों दल में ।
 भेद खुला चमगादड़ का सारा भर लोगों में पल में ॥
 व ने बट ऐसा शर्माया दिन में नहीं निकलता है ।
 अन्धेरे में छिप कर चरता नहीं किनी से मिलता है ॥
 समय पड़े जो दोनों दल की करते हैं ' हाँजी हाँजी ' ।
 वे चमगादड़ के समान दोनों की सहने नाराजी ॥

अभ्यास के लिए प्रश्न

- १—चमगादड़ क्या बट कर पशुओं से मिला और क्या बट कर बिड़ियों से मिला था ?
- २—चमगादड़ क्यों शर्माया ?
- ३—एक बटिका ने क्या शिक्षा मिली है ?

२२—शिक्षा की आवश्यकता (२)

हम सब ' पढ़ने वाले ' हैं। एक गुण है। वह पढ़ने
 सब गुणों का नाम है। यह सब ' पढ़ने ' है। अन्तर्नि-
 ता है। समस्त व सबसब गुणों के नाम है। यह सब
 हानि का अन्तर्निर्माण है। गुणों के नाम है। यह सब

२—जिहा की आवश्यकता किस लिए है ?

३—जिहा न मिलने से क्या हानि है ?

४—मित्रपथी होना क्यों आवश्यक है ?

२३—हमारा शरीर

एक दिन संध्या समय इन्दिरा और उसकी माँ, दोनों रने घर के द्वार पर खड़ी थीं। इतने में शान्ति नाम की लड़की उसी के द्वार के आगे से भागती हुई दिखाई दी, उसके पीछे एक बूँदवा हुआ दौड़ता चला आया।

इन्दिरा और शान्ति दोनों साथ साथ पाठशाले में जाती हैं। आज शान्ति को पाठशाले में आने में कुछ देर लगी। शान्ति बड़ी पल्लव लड़की है। उसने रात में सोते-से खुशे को पकड़ लिया था। बूँदवा उसकी काटने-लिये भूँदवा हुआ उसके पीछे दौड़ा। शान्ति आगे भागती जाती थी और बूँदवा उसके पीछे पीछे दौड़ता आया था।

जब वह इन्दिरा के घर के सामने पहुँची तब इन्दिरा खुशे को रोक कर उसका पीछा हुआ। तब शान्ति

अपने घर चली गई तब इन्दिरा अपनी माँ के पास आ
कहने लगी—माँ ! शान्ति क्यों भागी जाती थी ?

उसकी माँ ने कहा—बेटी ! भागती न, तो ई
उसे काट लेता । इन्दिरा ने कहा—यह तो ठीक है, पर
वह अपने पैरों से दौड़ रही थी । पैरों को कैसे जान
कि कुत्ता उसे काटने जाता है ? इन्दिरा के प्रश्न को
कर उसकी माँ बहुत प्रसन्न हुई । उसने कहा—बेटी !
इस प्रश्न का उत्तर बड़ा रोचक है । तू सुनेगी तो तुझे
नई बातें भी मालूम हो जाएंगी, और तू प्रसन्न भी
आवगी । प्रस्था, ध्यान लगा कर सुन, मैं तुझे
कारण बताती हूँ ।

इन्दिरा की माँ, बेटी का हाथ पकड़ कर छत
ऊपर ले गई और बैठ कर वह इस प्रकार बातें
छगरी—

यह जगत् जीव के रहने का एक घर है । जीव इस
शरीर का राजा है । मन, राजा का पन्थी है । शरीर
इसका कलिब कल नाकन नाकन है ; ये सब मन के भाव
हैं । मन ऐसा करता है व ऐसा ही करता है । मन्येह नीति
का इयम उदाहरण है । मन्येह नीति भवता है
काय इयम है । मन नीति का नायक है—भीति, काय

नाक, मुँह, जीभ, हाथ और पैर । आँख का काम देखना, ज्ञान का काम सुनना, नाक का काम सूँघना और साँस लेना, मुँह और जीभ का काम स्वाद बताना और सच बोलना, हाथ का काम करना और पैर का काम चलना है । सब नौकर अपना अपना काम ठीक ठीक करते हैं और आपस में बड़ा मेल रखते हैं । समय पढ़ने पर वे अपने साधियों की सहायता करते हैं ।

अब तुम इन बातों को इस प्रकार समझो । शान्ति का मन अभी बुद्धिमान नहीं हुआ है । वह बड़ा चञ्चल और खिलाड़ी है । उसने राह में कुत्ते को सोते हुए देख कर हाथ को घूबना दी कि पत्थर हटा कर उसे मारे । हाथ ने उसके आज्ञानुसार ऐसा ही किया । जब कुत्ते के शरीर में छोट लगी तब उसके मन ने उसके पैरों को आज्ञा दी कि नू शान्ति के पीछे दौड़, और जब कुत्ता शान्ति के पास पहुँचा तब उसका मन उसके मुँह को आज्ञा देता है नू शान्ति के पास जा और अपनी छोट का बदला ले । और फिर जब शान्ति का आँखों ने देखा कि कुत्ता पास ही है तो आँख का मन ने सूँघना दी कि कुत्ता बुरा होता है और तब मन ने शान्ति के पैरों को आज्ञा दी कि कुत्ते को मार दे । तब मन ने शान्ति

यहाँ से भागो । बस, उसके पैर भागने लगें । दोनों पैरों ने भाग कर शान्ति को बचा लिया । तुम्हारे घर में तुम्हारे मुँह को कुत्ते को डाटने की आज्ञा दी । तुम्हारे जीभ और मुँह ने मिलकर कुत्ते को डाँटा, कुत्ते के मन में उसके पैरों को उहरने की आज्ञा दी और कुत्ता उबर गया । देखो, आँख, कान, नाक, मुँह और पैर ने मिल कर इस काम किया । यदि आँख न देखती या पैर न भागते तो कुत्ता शान्ति को काट खाता ।

अभ्यास के लिये मसन

१—शरीर का राजा कौन है ?

२—आँख, कान, नाक, मुँह, जीभ, हाथ और पैर इन सब काम क्या हैं ?

३—शरीर के कौन कौन अंग हैं ?

२४—मीमांसा के पद

यथा वा जेनन य नन्दच्छास्त्र ।

तैत्तिरीयं श्रुतिं यजुर्वेदं श्रुतिं जेनं यजे विद्याम् ।

अथ यजुर्वेदं यजुर्वेदं यजुर्वेदं यजुर्वेदं यजुर्वेदं ॥

क्षुद्र-घंटिका कटितट शोभित नूपुर शब्द रसाल ।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भक्त बछल गोपाल ॥

(२)

हरि, तुम हरो जन की भीर ।

द्रोपदी को लाज राखी, तुम बढायो चीर ॥

भक्त-कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर ॥

हिरनकस्यप मारि लीन्हो धर्यो नाहिंन पीर ॥

बूढ़ते गजराज राख्यो, कियो बाहर नीर ॥

दासि मीरा लाल गिरिधर, हरी जनकी पीर ॥

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—विस्तार, अधर, राजति,
बैजन्ती, क्षुद्र-घंटिका, मीर और पीर ।

२—प्रचलित हिन्दी में इनके रूप लिखो—मोहनी, मूर्ति,
धर्यो ।



पित्तानाचार्य
डाक्टर जगदीशचन्द्र वसु

सुख, सर्द-गर्म, प्यार-प्रहार आदि का कुछ अनुभव नहीं होता । आपने इस धारणा को निर्मूल साबित कर दिया है । आपने एक ऐसी कल बनाई है, जिसके सहारे पेड़-पौधों की चेतनता का पक्का प्रमाण मिलता है ।

आपने देश-देश में घूमकर लाखों विज्ञान वेत्ताओं को दिखला दिया है कि पेड़-पौधे भी सुख-दुःख आदि का उसी प्रकार अनुभव करते हैं, जिस प्रकार हम तुम मनुष्य-माणी । आपके आविष्कार से पता चलता है कि कष्ट देने पर, टहनियाँ काटने या कुल्हाड़ा चलाने पर पेड़-पौधे उसी प्रकार कष्ट से सिहर और काँप उठते हैं, जिस प्रकार हाथ कट जाने या घाव लगने पर मनुष्य ; तथा पानी पाने या खाद डालने पर वे उसी प्रकार खिल उठते हैं, जिस प्रकार हम तुम दूध पीने या पेड़ा-बर्फ़ी खाने पर ।

यही नहीं, उन्हें सर्दी-गर्मी, धूप-छाँह, दिन-रात आदि का भी अनुभव होता है । बेहोशी की दवा देने पर वे भी, मनुष्यों की तरह बेहोश हो जाते हैं : और उस बेहोशी की हालत में उन्हें भी कष्ट आदि का कुछ अनुभव नहीं होता ।

हाल ही में आपने पेड़-पौधों में नाप के विष के प्रभाव

या वास्ता ! सुनने में तो तुम्हारा कथन सच जँचता है, किन्तु ज़रा गौर करो । यह जीवन क्या है—एक लड़ाई है । जो जितने षड़े लोग हैं, उनके जीवन की लड़ाई भी उतनी । घमासान होती है । फिर, कोई नया आविष्कार करना या है, संसार के विद्वानों से एक विकट युद्ध छेड़ना है—लोगों के पुराने ज्ञान के क़िले को तोड़कर एक नया ज्ञान-महल बनाना है ।

जिस समय जगदीश बाबू ने यह आविष्कार किया, संसार के विद्वानों में खलबली मच गई । उन्हें आपके कथन पर विश्वास न हुआ । वस, आप अपने कथन की सचाई साबित करने के लिए यहाँ से विलायत चले । साथ में अपने औज़ारों और कलों को ले लिया था । किन्तु इस बारीक बात को सम्भलाने वाली कलें भी बहुत बारीक थीं—जहाज़ पर चढ़ाने-उतारने की हलचल में टूट गई ।

अब आप विलायत पहुँचे, देखा कि कलें टूटी पड़ी हैं । तब तक विलायत में शोर मच गया था कि श्रीजगदीशचंद्र वसु अपने आविष्कार की सचाई साबित करने आ रहे हैं । हजारों विद्वान प्रतिष्ठा में बैठे थे । कलें टूट जाने में आप बहुत घबराए, किन्तु कोई चारा न था । लज्जित और

और वह बीजों को अच्छी तरह उगा नहीं सकती ।
 लिए खेतों को खाद से बलवान बनाना किसान का
 काम है ।

पहले लोग खेत में एक बार फसल पैदा करके
 छोड़ दिया करते थे, और कम से कम एक वर्ष
 उसमें दूसरी फसल बोते थे । एक वर्ष तक खेत
 ज़मीन पड़ती पड़ी रहती थी जिससे उसे आराम
 था और वह अपनी शक्ति, जो फसल के पैदा कर
 खर्च हो चुकी थी फिर से मास कर लेती थी, और
 फसल के लिए वह तैयार हो जाती थी । पड़ती पड़े
 खेतों में किसान लोग अपने जानवरों को वहाँ की
 चरने के लिए छोड़ दिया करते थे । इन जानवरों के
 इत्यादि से खेत को पर्याप्त खाद मिल जाती
 साथ ही जो घास बच रहती थी, वह भी सड़-गई
 खाद का काम करती थी । अब यह बात बहुत क
 गई है, लोग खेतों को पड़ती छोड़ना तो दूर, वर्ष में
 चार जोतने-बोते हैं । ऐसी अवस्था में यह बहुत ही आवश्यक
 है कि खेत को पर्याप्त और उत्तम खाद में बल
 बनाया जाय ।

यह तो सभी को मालूम है कि गोबर का खाद

गादों से अच्छी होती है। इसे उमभग सभी किसान गमानी से तैयार कर सकते हैं। गोबर में खाद की सभी आवश्यक वस्तुयें हैं और गोबर मृत्युक किसान के गार् पर्याप्त रहता है। परन्तु किसान लोग अपने गोबर से बहुत बड़े अंश से कंटे तैयार करते हैं जो जलाने के काम में आते हैं। यह उनकी भूल है। उन्हें पहले गोबर से अपने खेतों के लिए पर्याप्त खाद तैयार कर लेनी चाहिए, फिर बचे हुए गोबर को कंटे इत्यादि के काम में लाना चाहिए।

गोबर की खाद तैयार करना कोई कठिन काम नहीं। गोबर के बाहर खेत के काम एक बड़ा गदा खोद कर गोबर जमा करते जाना चाहिए। यह आप ही आप मदता-मलता रहेगा, और थोड़े दिनों में उसने खाद तैयार हो जायगी। अगर इसी के साथ दिहनी कीटी मिट्टी और गन्ध की मिट्टी हो जाए, या कुछ-कुछ की इसी के साथ हो जाए तो खाद और भी अच्छी मिलेगी। खाद के गोबर बरतन को पर बड़ा कंटे रख दें, इसमें खेत में कुछ अधिक नहीं देंगे। किसानों को इस खाद में खरब गन्धों के लिए एक मूत्र पर्याप्त खाद तैयार कर लेनी चाहिए।

गोबर की खाद के अतिरिक्त और भी कई तरह के ऐसी खादें हैं, जो कम खर्च और सरलता से तैयार हो जा सकती हैं। पत्तियों से भी खाद बनाई जाती है।

पत्ते की खाद को छोड़कर कूड़े-करकट की भी सफाई उत्तम होती है। घास-फूस, कूड़ा-करकट और राख इत्यादि को एक गड्ढे में ढाल कर सड़ा लेते हैं और फिर इसी की खाद के काप में लाते हैं। यह खाद भी बड़ी आसानी से कम खर्च से तैयार हो जाती है। अगर लोग की ऋतु में थोड़ा कष्ट करें तो उत्तम खाद तैयार कर सकते हैं। इस ऋतु में पेड़ों से पत्ते मूल्य कर लिए जायें। इन पत्तों को इकट्ठा कर के एक गड्ढे में सड़ा दिया जाय और इसी के साथ थोड़ा सा गोबर इत्यादि भी डाल दिया जाय तो उत्तम खाद तैयार हो सकती है। खाद के लिए जो गड्ढा खोदा जाय वह कम से कम चार या पाँच गज लम्बा, ढाई या तीन गज चौड़ा और तीन या चार गज गहरा हो और नीचे की तरफ ऊपर के मुकाबले कम चौड़ा और डालू रहे।

गड्ढे में खाद के लिए जो चीजें छोड़ी जायें वे फेंटाकर जायें। अगर गड्ढे में पहले घास-फूस का एक छप्पर ढाल दिया जाय तो अच्छा है। जब गड्ढे

सकती। यूरोप और अमेरिका में वैज्ञानिक ढंगों से इस प्रकार की खाद तैयार की जाती है, लेकिन हमारे पास ऐसा नहीं हो सकता। इसीलिए अभी हम उनका इन्तजाम नहीं करते। सरकार की तरफ से कई जगहों में बड़े-बड़े 'फार्म' खोले गये हैं, जिनमें नए उपायों से खाद बनाना सिखलाया जाता है। जमींदारों और अच्छे किसानों को चाहिए कि वे बड़ा जाकर उन उद्योगों को देखें और जानें।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—खाद से क्या लाभ है ?

२—खाद कितनी तरह से तैयार की जाती है ?

३—कौन सी खाद सरलता और कम खर्च से तैयार हो सकती है ?

४—पत्तियों या घास फूस से खाद कैसे तैयार की जाती है ?

५—पड़ती ज़मीन किसको कहते हैं ?

२७—बेतार का तार

रेल के स्टेशन पर गाड़ी आने से पहले तार-बाबू के पाँवों में, टिक-टिक-टिक-टिक शब्द तुमने अवश्य सुना होगा।

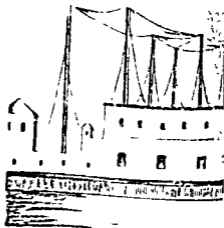
तार वायू अपनी लँगली से तार की कल को धीरे धीरे दवाते हैं, उससे टिक-टिक शब्द सुनाई पड़ता है। उस टिक-टिक शब्द से एक प्रकार का कम्पन पैदा होता है, जो बिजली के बल से, तार द्वारा, दूसरे स्टेशन पर पहुँचता है। वहाँ के तार-वायू जब तार की कल को लँगली से दवाते हैं, ठीक वैसा ही टिक-टिक शब्द उसमें से निकलने लगता है। इस टिक-टिक शब्द को समझने के लिए, एक खास शब्द-कोष होता है उसी के आधार पर पिछले स्टेशन के तार-वायू की बात वहाँ के तार वायू समझ जाते हैं और उसके अनुसार कार्रवाई करते हैं।

इस प्रकार तार द्वारा एक जगह से दूसरी जगह खबर भेजना अचरज भरा काम है। किन्तु यह सुन कर तुम्हें और अचरज होगा कि अब तो बिना तार के ही जहाँ वहाँ समाचार भेजे जाते हैं। उसमें तार की ज़रूरत बिल्कुल नहीं पड़ती। ज़रूरत होती है केवल तार देने और तार प्राप्त करने की दो मशीनों की। तार टूट जाने पर, तार द्वारा खबरें भेजना असम्भव हो जाता है किन्तु वेतार के तार में ऐसा कोई भ्रष्ट नहीं होता है।

इस वेतार की कल के आविष्कार करने वाले थे—इटली के माकिनी माइव। सन् १९०७ ईसवी में उन्होंने इसका



THE UNIVERSITY OF CHICAGO



ब्रिज का नगर का नगर

पर जिस प्रकार गोलाकार तरंगें उठती हैं-इसमें तार के शब्द करने पर वसी प्रकार की तरंगें पैदा की जाती हैं जिन्हें दूर पर लगी बेतार के तार की कल खींच लेती हैं। 'रेडियम' नाम के पदार्थ से इस प्रकार की तरंगें भी जल्दी जल्दी उठने लगती हैं।

बेतार के तार भेजने वाले जिस घर में बैठ कर काम करते हैं, वह इस प्रकार बंद रहता है कि उसके भीतर कोई शब्द नहीं पहुँच सकता है। वही से बैठ कर भेजने वाले चारों तरफ़ स्वयं भेजते हैं।

बेतार के स्टेशन तैयार करने में बहुत खर्च पड़ता है। इंग्लैण्ड के दो स्टेशनों के बनाने में, प्रत्येक के लिए, लगभग दो करोड़ रुपये खर्च हुए थे।

अब तो बेतार के तार से चित्र भी भेजे जाते हैं।
विज्ञान की महिमा प्रशंसनीय है।

प्रश्नोत्तर के लिए धन

१.—संस्कृत भाषा में 'विज्ञान' शब्द का अर्थ क्या है ?
उत्तर—विज्ञान का अर्थ 'बोध' है।

२.—विज्ञान की महिमा क्या है ?
उत्तर—विज्ञान ही हमारे जीवन का आधार है, जो हमें सच बताता है।

३—बेतार के तार से समाचार कैसे भेजे जाते हैं ?

४—हिन्दुस्तान में बेतार के तार के स्टेशन कहाँ कहाँ हैं ?

२८—कवि

कौन ईश की भक्ति-सुधा का, कविता-स्रोत बहावेगा ?
 कवि के बिना स्वधर्म-प्रेम को, कौन खोल दिखलावेगा ?
 कौन देश के मधुर प्रेम को, नर-उर में बैठावेगा ?
 कौन बिना कवि के स्वजाति का, सच्चा प्रेम बतावेगा ?
 कौन पिता के गुरु-स्नेह को, पुत्रों को समझावेगा ?
 कौन जननि का हृदय खोलकर, मातृ स्नेह दिखलावेगा ?
 कौन मरोदर भ्राताओं का, उत्तम प्रेम सुनावेगा ?
 कौन परम प्रिय मित्रों का, प्रिय पावन प्रेम बतावेगा ?
 कौन मुहवि के बिना प्रकृति का, सुन्दर दृश्य दिखावेगा ?
 कौन पुराने वर वीरों का, कीर्ति-सुधा बरमावेगा ?
 कौन पद्म-नगा का, प्रति प्रेम प्रगाढ़ सुनावेगा ?
 कौन मरु-सीमा का, हृदय में याद दिलावेगा ?
 कौन उमर भर पुनः पुनः बोलता, बाने हमें सुनावेगा ?
 कौन दर-दर में भी फिर, वीर-स्वप्न बहावेगा ?

चित्त का तो कहना ही क्या है . जिन जिन वस्तुओं के
में बढ़ पहुँचेगा वे भी स्वर्गीय आनन्द-को स्वाद पावेंगे —

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—संगीत-विद्या से लाभ बताओ ।

२—किन गीतों से बचना आवश्यक है ?

३—गाने के साथ बाजा क्यों बजाया जाता है ?

४—कोई कोई व्याघ्रा हरिष का आखेट नाम-विद्या के द्वारा
किस प्रकार करता है ?

५—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनको वाक्यों में
प्रयोग करो :—

गुच्छ, वर्याक, बीया, गूदुक्तता और सुरीला ।

३०—सालार

राना इनका यह म विर्भाव ना जाना रहा था, म
राजा का बदरी उमक पगल म नही ना था । रह रह
में कहा पदा अपने दिन रात रहा था

राना बहमो कोन ह विर्भाव पर रहा पदा मि
रहा है, वरन्तु पगल नही निहयन । माँ, कए गव न

बेटे हुए मृत्यु का रास्ता देख रहे हैं, मगर राना मारता नहीं। निदान बेटों ने पूछा—आपका दम काहे में अटक रहा है? राना ने कहा—मैंने काठियावाड़ के १२५ घोड़े अपने पुरोहितों को देने के लिए कहे थे। १०० घोड़े तो परभार कर दे दिये हैं, २५ और देने हैं। तुम देने का संकल्प लेलो तो मुझे तपस्वी हो और अभी प्राण निकल जायँ।

बेटे कुछ बच्चे नहीं थे, सब दाढ़ी मूँछ वाले हो चुके थे। मगर किसी का संकल्प लेने का साहस न हुआ। जब बार का संकट से छुड़ाने के लिए उसकी लड़की लालर भारी लेकर आगे बढ़ी और बोली कि दाजीराज, यह संकल्प मुझको दीजिए, और आप ठंडे ठंडे स्वर्ग निशारिए। मैं आपका प्रण पूरा करूँगी।

राना बंटी न पगाये घर का धन है: मैं तुम्हें ऐसे कठिन संकट में नष्ट होना न दूँगा।

लालर दाजीराज के पास गई और बोली कि मैं आपका ही धन हूँ, पगाये घर का धन न दूँगा, मैं सब कुछ आपका संकल्प पूरा कर दूँगी। दाजीराज ने कहा कि मैं अपने संकल्प को पूरा कर दूँगा।

राना ने कहा कि मैं दाजीराज के हाथ में न दूँगा।

छोड़ दिया । संकल्प छोड़ते ही उसके माण पतले हो गये ।

जब धारह दिन हो गये तब लालर ने बाप की चिन्ता पर जाकर अपनी जनानी पोशाक उतार दी, मरदाने कपड़े पहन कर चर्खा हाथ में ले घोड़े पर सवार हुई और काठियावाड़ में घाड़े (घोड़ों के झुण्ड) मारने लगी । घाड़े में जो घोड़ा हाथ लग जाता था उसे बाप की चिन्ता से फिरा कर पुरोहितों को दे देती थी ।

ऐसा करते करते एक दिन उसका डेरा एक बरगद के पेड़ की गहरी छाँड़ में पड़ा था । उधर से एक जवान राजपूत आया और वह भी उसी छाँड़ में डेरा डालने लगा । इस पर लालर चर्खा तान कर उसके सामने खड़ी हो गई ।

राजपूत—श्रीमान् छाँड़ तो बहुत पड़ी है । मेरे पशु ठहरने से आपकी कोई हानि नहीं है ।

लालर—यह सच है परन्तु एक विनयान राजपूत के डेरे में दूसरे राजपूत का डेरा नहीं हो सकता । अगर राजपूती बल रखने हो तो आओ लड़ लो ।

राजपूत—मैं भी एक विख्यात राजपूत हूँ। मेरी ज़मीन
 छिन गई है, उसको फेर लेने के लिए धाड़े मार-मार
 खावियाबाद से घोड़े लाता हूँ। जब सौ दो सौ इकठ्ठे
 मारेंगे, तब दुश्मनो से लड़कर अपनी ज़मीन छीन
 ला। आज तुमको देख कर चाहा था कि तुम्हारे पास
 तो दाल कर साथ ही रहूँ; क्योंकि एक से दो भले
 होते हैं।

लालर—आप राजपूत और विख्यात पुरुष हैं, तो मेरे
 मेरे भाँखों पर रहें। मुझे साथ रह कर धाड़े मारना और
 लड़के आपके घोड़े बाँट लेना संजूर है। मगर यह नहीं
 संजूर कि आप यहाँ मेरा दालें। यहाँ तो मेरा ही मेरा
 होगा। आप दूसरे बरगद की लीह में मेरा दालें। बरगद
 तो यहाँ बहुत हैं।

राजपूत—बना तुम इस बरगद के मालिक हो ?

लालर—मैं मालिक तो नहीं, पर जहाँ अब तक मालिक
 है। वह जब तक मेरा साथ है दूसरे का मेरा नहीं
 साथ में होगा।

राजपूत—इस बात पर राजा बरगद की लीह में बड़ा
 मन्दा होकर खड़ा होकर तो बरगद की लीह में बड़ा
 खड़ा होकर खड़ा होकर बरगद की लीह में बड़ा

हुआ है। वह डेरा ढालने नहीं देता, मैं तो ऐसा राजपूत कभी नहीं देखा। मरने को तैयार है।

नौकर—विस्थापित राजपूत को क्यों छेड़ने हैं ? यहाँ डेरा ढाल लें।

राजपूत ने वहाँ डेरा ढाल कर सालार से मिल कर और फिर दोनों साथ रह कर घाड़े पारने लगे। मगर अलग ही रखते थे। एक दिन नौकर ने, जो नाम था, सालार को किसी तरह नहाने दूर देख लिया। उसने अपने सरदार से कहा, यह तो मर्द नहीं औरत है। राजपूत मुनकर मग्न रह गया। मगर सालार की पाक दिल पर ऐसी पेंची थी कि नाई से कहा—चुप रह, यह बात फिर न कहना। यह कोई राजपूतनी है और विदेश में है, इसलिए हमको इसका अदब करना चाहिए।

हम वहाँ पर भी पता दिये देने हैं कि पर राजपूत अमल में मारवाद के गव मर्जीनाय थे। उनके राज्य भी मुल्तान में छोन लिया था। सालार का पता राजार उनके दिल मल्लुपाना तो था परन्तु समय बर्तों को गव परस ही दिन से दिल में पसों बंद गा था कि नाम और पता पूछन की बात भी वह म नहा 'नकाज मकन' यहाँ कहा कभी बातों के शिवा में पर न कह गुजान थे कि पकना जाति

वे राजपूतानियाँ बड़ी बड़ादुर हो गई हैं। इन्होंने राजपूती के
वे बड़े काम किये हैं और मदों का साथ दिया है।

लाकर सुनकर उनका मतलब तो समझ जाती थी,
सा कुछ जबाब नहीं देती थी। होते होते जिस दिन २५
घंटों की गिनती पूरी हो गई तो तीन घण्टे लूट में आये,
लाकर ने कहा—भाज तक तुम्हारा हमारा साथ या अब हम
रने जायेंगे।

मलीनाथ—अफसोस ! क्या इतने दिनों साथ रहने का
साथ छोड़ दोगे ? अभी तो एक घण्टा और लाना है। तीन
घंटे बराबर नहीं बैठ सकते।

लाकर—आप लाया करना, हम तो अपना रेंड छोड़ा
ने में।

मलीनाथ—रेंड क्यों, सारा ही लेलो, सुप्त में छोड़े की
जान जायगी।

लाकर अपने ही साथ साथ वे भी आधा आधा
रेंडना ही चाहते हैं।

मलीनाथ—अब मैं भी आधा आधा ले लूँगा।

लाकर—अब मैं भी आधा आधा ले लूँगा।

लाकर—अब मैं भी आधा आधा ले लूँगा।

लाकर—अब मैं भी आधा आधा ले लूँगा।

मुझे तो जितनी लफड़ी की जरूरत पड़ती है, सब ले आता है। वह इसे सेवा कार्य करता है। नियमानुसार उसे रोज किसी के साथ एक मना का काम करना पड़ता है और मेरी बहिन, अब मैं नित्यमति अच्छा होता जाता है।

खंखाड़ा देवी—अरे मुझे लड़कों का खेलना बहुत बिल्कुल नहीं भाता और अब तो लड़कियाँ भी मैं तूफान में घसीक होने लगीं। मेरा पुत्र सनीचा हमेशा गर्लगाइडों पर हँसता है। अरे उनको चारि कि वह घर का काम करें। इस कूद फाँद में क्या रक्खा है।

सुशीला देवी—गर्लगाइडिंग में ठीक यही तो सिखाया जा रहा है। हमारी शान्ता ने चुटखी के पट्टी बाँधना और अच्छे अच्छे व्यंजन बनाना सीख लिया है। यो बहुत बागवानी का काम भी कर लेती है। मैं यह देखिए वमी के हाथ के मिल्ने हुए कपड़े हैं।

खंखाड़ा देवी—मेरी राय में यह ना कोई बुरी बात नहीं अगर भंडी दिखाने से क्या फायदा है ?

सुशीला देवी—आप इसे नहीं जानतीं। अगर हमारे दे

पर कभी दुश्मन धावा करे तो भंडी से सैकड़ों जानें भूख प्यास और मौत से बचाई जा सकती हैं। हमारा भारतवर्ष तो सोने की चिड़िया है। दूसरे देश वाले इसे दृढ़ कर जाने को हमेशा मुँह धाये बैठे रहते हैं।

खेखाड़ा देवी—यह काम मर्दों को करना चाहिए। मर्द काहे के लिए बने हैं।

मुनीला देवी—मर्द तो दुश्मन से लोहा लेते होंगे। अगर उनके चोट लग गई तो गर्लगाइड उनको उठा लायेंगी और मरहम पट्टी करेंगी। हर स्काउट और गर्लगाइड को स्वार्थ-त्यागी होना सिखाया जाता है। वह जो कुछ भी काम करती हैं उसमें दूसरों का सदा ध्यान रखती हैं।

खेखाड़ा देवी—अरे, अगर वे ऐसा करती हैं तब तो बड़ी अच्छी बात है, मगर मैं तो उनको अक्सर खेलते ही देखती हूँ।

मुनीला देवी—हम सभी को बड़े बूढ़े हो जाते हैं—खेलने करने की आवश्यकता रहती है और अगर खेल अच्छा है तो हममें ज़ोर से बड़ा जायदाद

बाळा-बोधिनी

मुझे तो जितनी लकड़ी की ज़रूरत पड़ती है वह सब ले आता है। वह इसे सेवा कार्य करता है। नियमानुसार उसे रोज़ किसी के साथ एक मल्लाई का काम करना पड़ता है और मेरी बहिन, अब वह नित्यपति बन्धा होता जाता है।

बताइए देवी—अरे मुझे लड़कों का सेलना बूढ़ा बिटकुल नहीं माना और अब तो लड़कियाँ भी इस तूफान में शरीक होने लगी। मेरा पुत्र सनीवर हमेशा गर्लगाइडों पर हँसता है। अरे उनको चारिए कि वह घर का काम करें। इस बूढ़े फौद में क्या रक्खा है।

मुझीटा देवी—गर्लगाइडिंग में शीक पढ़ो तो मिखाया जाता है। हमारा नान्ना ने चुटइयों के पट्टी बाँधना और अच्छे अच्छे व्यंजन बनाना सीख लिया है। पोढ़ा बहुत बागवानी का काम भी कर लेती है। और देखिए उम्मी के हाथ के मिल्ने

पर कभी दुश्मन धावा करे तो झंडी से सैकड़ों जानें भूख प्यास और मौत से बचाई जा सकती हैं। हमारा भारतवर्ष तो सोने की चिड़िया है। दूसरे देश वाले इसे दड़प कर जाने को हमेशा मुँह धाये बैठे रहते हैं।

खेखाड़ा देवी—यह काम मर्दों को करना चाहिए। मर्द काटे के लिए घने हैं।

सुनीला देवी—मर्द तो दुश्मन से लोहा लेते होंगे। अगर उनके चोट लग गई तो गर्लगाइड उनको उठा लायेंगी और मरहम पट्टी करेंगी। हर स्काइट और गर्लगाइड को स्वार्थ-त्यागी होना सिखाया जाता है। वह जो कुछ भी काम करती हैं हममें दूसरों का सदा ध्यान रखती हैं।

खेखाड़ा देवी—अरे, अगर वे ऐसा करती हैं तब तो बड़ी अच्छी बात है, मगर मैं तो इनको अक्सर खिलते ही देखती हूँ।

सुनीला देवी—हम सबों को बड़े बूढ़ा हो चाहे जवान—खिलने मरने की आशंका पड़ती है और अगर बिजु प्रकट है तो हममें अक्सर का बड़ा फावड़ा

पहुँचता है। मैं आपके लिए लकड़ी लाए देती हूँ। मुझे भी चाय तैयार करनी है। हम लोगों के भी चाय पीने का समय आ गया है। (खिड़की से बाहर की तरफ देख कर) अरे ! यह क्या घात है। बहिन खम्बादा जी आपकी बेटी पसीटन चढ़ी घबड़ाई हुई दौड़ती चली आ रही है और गर्लगाइड किसी को लादे हुए दोली पर लिए आ रही हैं। पीछे पीछे बहुत से पत्तन चले आ रहे हैं। मेरा खयाल है कि वे अभ्यास कर रही हैं।

खम्बादा देवी—(खिड़की के बाहर देख कर) हे ईश्वर ! यह भीड़ किस लिए इकट्ठी हो गई है।

मुगीजा देवी—मान्यम होता है कि कोई लड़का दोली पर लेटा हुआ है और उसके शरीर पर पट्टियाँ बाँधी हुई हैं।

पसीटन—(रोड़ती हुई आकर) दीदी, ए दीदी ! सनीकर के चोट लग गई। वह तामुन के दरख्त से गिर गया है, उसकी टाँग टूट गई है। हाय ! अब क्या होगा।

खम्बादा देवी—'अपना मया पाटने लगती है', हाय भगवान ! अब क्या होगा हाय रे ! अब मैं क्या करूँगी ?

बूँसा—खंखाड़ा चाची, पबड़ाइए नहीं। हमने आपके बेटे की टाँग को खपची से बाँध दिया है और मीनाजी दाहिनिक्लि पर चढ़ कर टाक्टर को बुलाने गई है। (होली लिये मलंगगाड दाखिल होती है) लड़के की बाँह भी कुछ बट रिट गई है मगर चोट ज्यादा नहीं है। खंखाड़ा चाची, आप बिल्कुल पबड़ाइए नहीं। (होली जमीन पर रक्खी जाती है और मलंगगाड मनीचर को उठा कर बारपाई पर जिताती है।)

खंखाड़ा देवी—(लड़के के ऊपर लुक कर) हाय मेरे बेटा मनीचर। हाय ! अब मैं क्या करूँगी।

मनीचर—माता जी आप रोइए नहीं, मैं अच्छा हूँ। मैं रिक्खत बाँर रहा हूँ। अब मैं फिर कभी मलंगगाड पर न हिंसा। पर जनों की बेतरबानी है कि मैं यहाँ तक ऐसे आगम से पहुँच सका। अब मेरी तद्विषय दाने से कुछ अच्छी है। (जनी दीव में सीमरी मलंगगाड मलंगगाड जी की बारपाई के पास बैठने को एक कुर्सी पर बैठा है)

मनीचर—माता जी आप रोइए नहीं, मैं अच्छा हूँ। मैं रिक्खत बाँर रहा हूँ। अब मैं फिर कभी मलंगगाड पर न हिंसा। पर जनों की बेतरबानी है कि मैं यहाँ तक ऐसे आगम से पहुँच सका। अब मेरी तद्विषय दाने से कुछ अच्छी है। (जनी दीव में सीमरी मलंगगाड मलंगगाड जी की बारपाई के पास बैठने को एक कुर्सी पर बैठा है)

कुल सीलूट देती हैं। खंखाड़ा देवी भी कुली से उठ केनी
है और सुगीजा भी ममरते करती है)।

कैप्टन—(मर्षी के ममरकार का कतर देती हुई) बनि
खंखाड़ा जी आप सगरीक रतिर। (सगीकर की
तरफ जाकर बँधी हुई पट्टियों की जाँच करती है)
बहुत अच्छी, बिल्कुल सही, बिन्कुल दुस्त। खंखाड़ा
जी, आप ने देखा अगर ये छड़कियाँ गल्लगाइ
न हो गई होनी तो क्या ऐसी अच्छी पट्टी बाँध
सकनीं? यह तुम्हारे छड़के को गड़बड़ सड़बड़ उठा
छानी और उससे तुम्हारे छड़के की टाँग और सारा
हो जानी। आप देखनी हैं कि छड़कियों ने रींग
को म्पथियों से बाँध दिया है जिससे कि दूरी हुई
इष्टियों बिच्छुल न सकें और न खाल को ही काट
कर बाहर निकल आवें।

खंखाड़ा देवी—बाप ने मेरा प्यारा बेटा! तुम्हारे दर्द
तो नही होना?

मुन्नीला देवी—बीनाली बापस का गई है।

बीनाली—हमारा बाप बिना ह पन्द्रा पन्द्रा का मार्ये।

खंखाड़ा देवी—... (गुनगुनाते हुए) ... (गुनगुनाते हुए) ...

... (गुनगुनाते हुए) ... (गुनगुनाते हुए) ...

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—गर्लगाइड से तुम क्या समझती हो ?
- २—गर्लगाइड और स्काउट में क्या भेद है ?
- ३—गर्लगाइडों ने किस प्रकार सनीवर प्रसाद की जान बचाई थी ?

३२—रेशम

रेशमी कपड़े सब लोग व्यवहार करते हैं ; परन्तु रेशम किस प्रकार बनता है, इसका पूरा हाल बहुत थोड़े लोग जानते हैं । रेशम के बनाने की संक्षिप्त विधि यहाँ लिखी जाती है ।

हम लोग अनेक प्रकार के रेशमी वस्त्र व्यवहार करते हैं । वे एक प्रकार के कीड़ों की लार मात्र हैं । उन कीड़ों को इस देश में रेशम का कोया कहते हैं । कोयों की भिन्न जाति के अनुसार उनके शरीर के रंग भी हरे, पीले आदि नाना प्रकार के होते हैं और इन रंगों पर सुनहले आदि नाना प्रकार के बिन्दु होते हैं । पूरी अवस्था में कीड़े का शरीर करीब मान आठ इंच मोटा और चार पाँच इंच लंबा होता है, किन्तु कोई कोई जाति कुछ भी होती है । वे बेर, जामुन, पलाश, महान इत्यादि अनेक वृक्षों के

पत्ते खाते हैं। इस देश में अधिकांश रेशम मशरूत ही के कोषों से लिपा जाता है।



रेशम की उन्नति का वृत्तान्त गुनने से विस्मृत होना पड़ता है। रेशम के कोषे उक्त पेड़ों के पत्तों पर अटि देते हैं। मको बहार गयी जाने से भण्ड फूट जाते हैं और उनमें से छोटे छोटे कीड़े बाहर निकलने हैं। अनन्तर वे उसी वृक्ष के पत्ते खाकर और क्रमशः मयल होकर उसी वृक्ष पर विचरण करने लगते हैं। इस प्रकार एक मास पर्यन्त रहने ही में वे पूर्णवर्ष्मा का प्राप्त होत हैं। इनके दिना में तीन बार बार नये जमीन की खाद्य खादत हैं। खाद्य खादन में इनका वृक्ष पराजना मन्द नद जानी है। यही वह एक दिन तक म एक बार बाहर करने लगते हैं। इसी प्रकार दो, दो तीन दिन तक अनन्तर वह कर,

निश्चय के तीन चार पत्तों में जाकर, स्वाभाविक रीति से अपनी नासिका के दोनों छिद्रों से नार निशान कर, मकड़ी की तरह जाला सा लगाने हुए, पत्तों में घूमने लगते हैं। वायु लगने से बह नार बड़े मूत के समान हो जाती है। एक सप्ताह पर्यन्त इसी तरह घूम घाम कर, वे अपने वात-स्थान को इतना रद्द कर लेते हैं कि पत्ती अपने नखों या चञ्चु द्वारा इसमें छेद नहीं कर सकते। इसी स्थान में बाँये मकड़ी के जाले की तरह रेखन लगाते हैं। इस स्थान को भी बाँसा ही करते हैं। कहीं इसी जगह में रह कर ऐसी अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं कि पहले आहार में उनका कुछ भी सादर्य नहीं रहता। यहाँ तक कि जीवित है या नहीं—यह भी साहज ही नहीं जान हो सकता। यदि वह स्थान दूसरे मकड़ में न बाँटा जाय तो दो तीन सप्ताह में, भीतर का बाँदा विविध रस मिला विचली का रूप धारण कर, उस स्थान को बन्द कर बाहर निश्चय आता है। इसी मध्य के अंदर देना आसानी है। इन अंदर के इलाक़े को भी वह मकड़ का घूम रस है। मकड़ के घूम रस पर निश्चय है, इसी से मकड़ का घूम रस का नोचें क्षति पर नहीं मिलने और वह आहार करने का

भाँति होता है। दो तीन दिन अंड देने ही से, सब तितली रूप कीड़े मर जाते हैं और ये ही अंड उनकी जाति की पुनरुत्पत्ति के कारण होते हैं। इसी प्रकार उक्त कीड़ों का दो तीन मास में जीवन का सारा कार्य शेष हो जाता है। इसकी अवस्थाएँ चार होती हैं—अंड, कीड़ा, कोपा और तितली।

मुर्शिदाबाद, बीरभूमि, पर्देवान, भागलपुर, बंगाल तथा बिहार इत्यादि प्रान्त के अनेक स्थानों में रेशम की कोठियाँ हैं। इन कोठियों के लोग मायः शहतूत ही के कीड़ों से अधिकांश रेशम प्रस्तुत करते हैं। अतः अपनी कोठी के निकट शहतूत के वृक्ष लगाते हैं। और पूर्वोक्त तितली मयी कीड़ों से अंड दिलावा कर उन्हें संग्रह करके रखते हैं। जब उनके फूटने का ठीक समय आता है, तब एक पल्लनी में शहतूत के पत्ते बिछा कर उसके ऊपर उन अंडों को छीट देते हैं। अनन्तर अच्छी तरह गर्मी पाने में कीड़े अंड कोड़ा का बाहर निकलते हैं। जब कीड़े बहुत ही छोटे रहते हैं, तब शहतूत के पत्तों के छोटे छोटे टुकड़े का उस पल्लनी में गालना पड़ता है। जब कीड़े बड़े हो जाते हैं तब शहतूत के पत्तों को काट कर न देने में भी वे मर जाते हैं। किन्तु बड़ी मावधानी

ये उन चलनों को भाद पर पचे सदा बदलना होता है।
नहीं तो वे अपने मलमूत्र की गन्ध से शीघ्र ही मर
जाते हैं।

पचे बदलने के समय उनके शरीर को नहीं एना
पाहिये। वे मिग में रहते हैं, उसी के निकट दूसरे
पात्र में नदीन पचे रहने से वे स्वयं उसमें चले जाते
हैं और इसी पत्रनी में रहने सहने लगते हैं और कोपा
रनाते हैं। मर उन कोषों को लोग एकत्र करके रखते
और अष्टादि दिनों तक रखने के लिए नाम जल में
मिट्टी का चिन्ता का लेते हैं—नहीं तो तिन्नी सरी
धीरे स्थान बाट कर बाहर निकल जाय और रोग नष्ट
कर दे।

कोरी को रक्षा करने के लिए जल में रान का
कोरा लीज देते हैं। अनेकाने राने जल में निकाल कर
एक दूसरे के लाल पिता कर रखते हैं। ऐसा करने में
वे मर मर मर मर का जल सदा अपन में मिश्रित करते
हैं। मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर

मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर

धुल जाता है। किसी रेशम का रंग सफ़ेद भी होता है, पर अधिकांश पीला होता है। रेशम कोमल और टिकाऊ होता है। पाट, सन, सूत आदि की अपेक्षा रेशम अति हृद होता है। रेशम एक अपरिचालक पदार्थ है, इसलिए शीतकाल में धारण करने से जाड़ा नहीं लगता। भारतवर्ष, और चीन रेशम का आदि उत्पत्ति स्थान है। बहुत दिनों से इन देशों में रेशम का व्यवहार प्रचलित है। पूर्व काल के रूमी लोग इस देश से रेशम ले जा कर अपने देश में सुवर्ण के भाव से बेचते थे; परन्तु यूरोपियन लोग इन्हीं कीड़ों को ले जा कर, जव से रेशम अपने देश में उत्पन्न करने लगे हैं, तब से उसका मूल्य पूर्वापेक्षा बहुत ही ग्यून हो गया है।

हिन्दू लोग सूत की अपेक्षा रेशम को बहुत पवित्र मानते हैं। सूती धोती एक बार पहनने के बाद बिना धोये फिर नहीं पहनते। पहिन कर उतारी हुई धोती बिना पछारे अपवित्र रहती है, किन्तु रेशमी धोती अनंक बार धारण करके उतार टांगने पर अपवित्र नहीं मानी जाती। इसका कारण यह है कि आपूर्वेद में रेशम के विशेष गुण बतलाये गये हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ :—विधि, विस्मित होना और सादृश्य ।
- २—‘ अपरिचायक पदार्थ ’ कितने कहते हैं ।
- ३—‘ पद ’ का निम्न निम्न अर्थ बताओ ।
- ४—वाक्य बनाओ :—व्यवहार करते हैं, स्वाभाविक रीति से ।
- ५—रेशम की चार अवस्थाएँ कौन कौन सी हैं ?
- ६—कीड़े से रेशम कैसे निकाला जाता है ?

३३—फूलमती देवी

आश्रम एक बना था सुन्दर
वन में किसी गाँव के पास,
बूढ़े कई साधु रहते थे
उमरें करते भजन-उपास ।

ग्रामपाम के ग्राम-निवासी
अन्न-वस्त्र फल लाने थे,

हो निश्चिन्त परम, निज जीवन

बूढ़े साधु बिनाने थे । १ ।

बिना परिश्रम के सुख में जब
 उनको रहते दिन बीते,
 आलस-भरे हृदय तब उनके
 होने लगे प्रकट होते ।

धीरे-धीरे बढ़ी शिथिलता
 फिर जीवन ज्यों भार हुआ,
 त्यों फूलमती देवी का
 आश्रम में अवतार हुआ ॥ २ ॥

श्वेत वस्त्र, फूलों के भूषण
 पहने कर में फूल लिये,
 दिव्य रूप में सुन्दर दर्शन
 देवी ने तत्काल दिये ।

देव अलौकिक रूप सामने
 हुई माधुओं को आशा,
 पूर्ण अवश्य करेगी देवी
 हम सब की सुख-अभिलाषा ॥ ३ ॥

तब सब ने बड़े ही बड़े
 फूलमती को किया प्रणाम,

दिख ममाद ममभा फूलों की

सभी माँगने लगे सजाम ।

किसी किसी ने कर फैलाये

और किसी ने जोड़े राख,

कोई लगा मार्यना करने

किसी किसी ने देखा माघ ॥ ४ ॥

देवी बोली तिम में उनसे

कुछ नहीं तुम पाओगे.

बोली रने अनभय, आहमी

अरना ममय दिताओगे ।

अरने ही खाने, राने की

दिग्ग ने हृद राखे हो.

रन हृमो रने देवे हो.

अर ली हृद मारने हो ॥ ५ ॥

१२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥

१२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥

१२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥

१२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ५ ॥

प्रेम सहित देवी के आगे
 कर जोड़े वे रहे खड़े,
 दशा साधुओं की लख औंम्
 उनकी आँखों से उमड़े ॥ ६ ॥

ग्राम-वासियों की सज्जनता
 सदाचार, सेवा, अनुराग,
 लखकर फूलमती देवी ने
 दी तुरन्त अपनी रिस त्याग ।
 बड़े प्रेम से उसने उनको
 एक-एक वर-फूल दिया ;
 होकर परम कृतज्ञ उन्होंने
 सीस झुका करदान लिया ॥ ७ ॥

तब देवी ने बड़ी शान्ति से
 दिया साधुओं को उपदेश,
 अपने सुख के लिए किसी को
 उचित नहीं है देना कलेश ।

रोगी, दुखी, दीन, दुष्टों की
 आपधि, धीरज, आश्रय, सीख,

कर्म, वचन, मन से देकर ही

लेना तुम साधारण भीख ॥ ८ ॥

अभ्यास के छिये प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ—भजन-उपास, शिथिलता, तत्काल, अलौकिक, भक्तिभाव और सदाचार ।
- २—फूलनती देशी ने साधुओं को क्या उपदेश दिया था ?
- ३—देवी ग्रामवासियों से क्यों पत्थर और साधुओं से क्यों अपत्थर हुई ।
- ४—छत्रों छन्द का अर्थ बताओ ।
- ५—' कर ' के भिन्न भिन्न अर्थ बताओ ।

३४—वायु-यान

पृथ्वी विमान पर चढ़ कर राम लङ्का से अयोध्या आये थे, यह कथा आज से पचीस तीस वर्ष पूर्व स्वप्न की सी बात प्रतीत होती थी । किन्तु, आज घरघराने हुए हवाई जहाज़ जब हमारी नज़रों के उतर गढ़ाने हैं तब हमें वह स्वप्न प्रत्यक्ष रूप में दिखाने देता है । विज्ञान की माया विविध है कुछ वर्ष पूर्व, लोग जिन बातों पर हँसते थे, आज वे हमारे दैनिक जीवन का अङ्ग हो गयी है ।

हुआ। अग्निबोट की तरह इन गुब्बारों का मोटर मशीन से चलाना संभव हो गया। जर्मनी के काउन्ट जैपलिन नामक व्यक्ति ने यह आविष्कार किया और उसी के नाम पर ये वायु-यान 'जैपलिन' के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा जल-यानों की भाँति चलने लगे। जर्मन-महायुद्ध में इनसे काम लिया गया था। परन्तु, ये वायु-यान वायु-यान नहीं कहे जा सकते।

वायु-यान की दान ही और है। गुब्बारे और वायु-यान हवा से हल्की चीज़ें हैं, और वे हवा में हाइड्रोजन गैस के सहारे उड़ते हैं। परन्तु वायु-यान हवा से भारी पदार्थ हैं और यह मशीन के बल से हवा को चीरता हुआ जाता है। यही दोनों में अन्तर है। वायु-यान वास्तव में हवा में उड़ने वाली मशीन है।

वायु-यानों की कसौटी हम अपनी आँखों देख ही लेते हैं। जिस पृथ्वी की प्रदर्शिका की कल्पना भी कठिन थी, वह इन वायु-यानों ने प्रत्यक्ष करके दिखा दी। अटलांटिक महासागर को कितने ही उड़ाके पार कर चुके। कराँची में लंदन को डाक इन्हीं के द्वारा जाने लगी है। देश विदेशों का अन्तर अब कुछ दिनों का सफर रह गया। भारत में उड़ने जाने में अब केवल पाँच दिन लगते हैं।

शरद-ऋतु-वर्णन

अभ्यास के लिए प्रश्न

- १—इन शब्दों के अर्थ बताओ—आविष्कार, प्रविष्टि, भविष्य और विश्वव्यापी ।
- २—झाड़ों-जन के भरने से गुच्छरा क्यों उड़ने लगता है ?
- ३—'जैरजिन' कौन थे ? इनके सम्बन्ध में तुम क्या कहेंगे ?

३५—शरद-ऋतु-वर्णन

चौपाई

वर्षा विगत शरद ऋतु आई ।
 लक्ष्मण देखहु परम सुहाई ॥
 फूले दाम मङ्गल हरि छाई ।
 ऋतु वर्षा कृत मनट सुहाई ॥
 उदित धनस्य दण्ड उल्लसत ॥
 त्रिदि नौका नौके मन्दार
 लख लख लख लख लख लख
 लख लख लख लख लख लख
 लख लख लख लख लख लख
 लख लख लख लख लख लख

जनि शरद-फुल खंजन आये ।
 पाय समय जिमि सुकृत सुहाये ॥
 धंक न रेणु सोढ अस धरनी ।
 नीति-निपुण नृप को जस करनी ॥
 जल संकोच विकल भये मीना ।
 विविध कुटुम्बी जिमि धन-हीना ॥
 बिन धन निर्मल सोढ अकाशा ।
 जिमि हरिजन परिहरि सब आशा ॥
 कहूँ कहूँ दृष्टि शारदी धोरी ।
 कोउ एक पाव भक्ति जिमि मोरी ॥

दोहा

चले हरपि तजि नगर नृप, तापस वणिक भित्तारि ।
 जिमि हरि भक्तिहि पाइ जन, तत्रहि आश्रमी चारि ॥

चौपाई

सुखी मीन जहँ नीर अगाधा ।
 जिमि हरि शरण न एकी बाधा ॥
 कुलं कमल मोह सर कैसे ।
 निर्गुन ब्रह्म मगुण भये जैसे ॥

गुञ्जत मधुकर निकर अनूरा ।
 सुन्दर खगरव नाना रसा ॥
 चक्रवाक मन दुख निशि पेंती ।
 जिमि दुर्जन पर-सम्पत्ति देती ॥
 चातक रटत वृषा अति ओढ़ी ।
 जिमि सुख लहै न शंकर श्रेणी ।
 शरद ताप निशि शशि बरह्यो ।
 सन्त दरस जिमि पावछ छे ॥
 देखहि विधु चकोर मृदु ॥
 चितवहि जिमि हरिजन हरे ॥
 मशक दंश बाँते दिन शम्भु ॥
 जिमि द्विज श्रेष्ठ द्विजे इह नमः ॥

४—सतगुरु, हरिजन, मरित-सर, मधुकर और निर्मल जल
के मनास लिखो ।

५—शब्द-श्रुति का वर्णन अपनी भाषा में करो ।

६—अन्तिम दोहे का अर्थ बताओ ।

३६—मेरी कैलाश-यात्रा

अन्वोदा से कैलाश की ओर जाने के पहले रामेश्वर
जाना है । मैं कई माधियों के साथ अन्वोदे से चढ़ता हुआ,
पहाड़ी दरम डंगना हुआ, पहाड़ी नालों की गड़-गड़ सुनता
हुआ आनन्द में ना रहा था । हम कहीं नाले के किनारे-
किनारे ना रहे हैं, कहीं चिरे हुए वृक्षों के उण्डे मार्ग से,
कहीं दोनों ओर खम्बे-खम्बे चीड़ के वृक्षों की सर-सर
शरणि मुनाई देती हैं, कहीं बिलकूल नीचे की ओर उतर
गये हैं, कहीं थोड़ा चढ़ाव है । हम बने के लगभग एक
ऊँची चढ़ाई के पास पहुँचे । यहाँ से डेढ़ मील बिकट
चढ़ाई है । पीछे-पीछे बड़े जगह हम लेते हुए पहाड़ के
ऊपर पहुँचे और हम चढ़ाई को दार किया । मार्ग में
पत्थरों के बने हुए बने हुए चढ़ाई समान हुई नव गटे पानी
की धारा बहती है । यह धारा दृष्टि में आती है, और जल दिया,
जल दाने के रूप में पहाड़ टूटा गया, बाह ! यहाँ से

फिर दो-एक लोगों को साथ लिया और बड़े विकट गमने को पार करके घागेश्वर पहुँचे। घागेश्वर में सरयू नदी का दृश्य दिखला कर वहाँ की कुछ बात बतलाना है। दोनों ओर दूर तक लम्बी, ऊँची, टरी-टरी पहाड़ियों के बीच घाँस पाटी में आप अपने आपको चढ़ा हुआ समझिए। उमरी पाटी के बीच पत्थरों को रगड़ती हुई सरयू नदी बह रही है। पिता दिनाचल की गोद से निकल कर अपनी माँचरियों के साथ टेढ़े मेढ़े चक्कर काटती हुई सरयू घनानी चाल से घागेश्वर में पहुँचती है। यहाँ पश्चिम में आने वाली अपनी बहिन गोमती के स्वागत के लिए बर अपनी चाल धीनी कर, बड़े मैदान से उमकी ओर निहारती है। फिर बेग में आगे बढ़ कर भगिनी का मुख देखती है। अहा ! क्या सुन्दर दृश्य के सामने निरुद्ध हो पश्चिम की ओर पीठ पर रखे होने से सामने निरुद्ध हो पड़ो पर्वत के दर्शन होते हैं। उनके ऊपर चट्टी बहागनी का दण्डित है। पीछे पश्चिम में नील पर्वत अपनी छटा दिखाता है। इन पर भगवान नीलेश्वर विराजमान हैं। पूर्व में बालागनी का चाल आकर सरयू की का चरण छूती है। बालागनी की चरण सरयू के बर वहाँ गमनी में होकर बहती है।

वहाँ सङ्गम पर बाँधनाथ जी का प्राचीन-मन्दिर है। यहाँ मकर संक्रान्ति का जनवरी में बड़ा भारी मेला होता है। बागेश्वर सरयू जी के दोनों किनारों पर बसा है। दोनों किनारों पर आमने-सामने दुकानें हैं। दो पुल बने हैं; एक गोमती पर, दूसरा सरयू पर। बागेश्वर में पुल के पास ऊँचे पत्थर पर बैठ कर मैंने सरयू जी की छटा देखी, स्नान का बड़ा आनन्द आया। बागेश्वर में तीन दिन रहा। सरयू जी का स्नान नहीं भूलेगा। अवध-वासियों को चादिए कि बागेश्वर में जाकर सरयू का विचित्र आनन्द लूँ। इधर की छटा ही निराली है। जून ११, सोमवार को सवेरे छः बजे के बाद बागेश्वर से चला। मेरे मेमियों ने मेरा सामान-विस्तरा और फलों की थैली उठाने के लिए कुली खोज दिया था। मैंने सब से धनदे कहा; फिर छतरी कमण्डल छाठी उठा सड़क पर हो लिया। इतने में ही धनघोर पटा छा गई, वर्षा होने लगी। सरयू जी का पहाड़ी राग मुनने जा रहे थे। मार्ग घुरा है, कहीं नदी के किनारे-किनारे, कहीं दूर होकर गया है। वर्षा से सड़क और भी बिगड़ गई है। आगम-भागने सात मील पूरे किये, और कपिकोट पहुँचे। कपिकोट से सबसे दुग्ध पान करके चला। दोनों माधु कार्ययज्ञान वाले गढ़

गये । कुछ सज्जन दूर तक पहुँचाने के लिए साथ आये । सरयू के किनारे-किनारे प्रकृति माता के दृश्यों का आनन्द लेता हुआ मैं चला । कपिकोट से तीन मील तक सरयू-घाटी का दृश्य बड़ा ही मनोहर है । हरित पहाड़ियों पर गाय-बकरी चर रहे थे, किनारे-किनारे जहाँ घाटी चौड़ी हो गई है भूमि घास से लदी हुई बड़ी सुहावनी देख पड़ती है । नदी का पाट चौड़ा है, पर जल कम है क्योंकि अभी वर्षा आरम्भ नहीं हुई थी । आकाश निर्मल था । आनन्द में मन में चला जा रहा था । सामने गाय-भैंस रास्ते में खड़ी थीं । उनके साथ मैले, कुँचले कपड़े पहने हुए चारवाहे भी थे । लाठी से मैंने अपने लिये रास्ता किया । गायें बहुत छोटी-छोटी थीं, और चारवाहे भी वैसे ही थे । ऐसे सुन्दर सुहावने जल-वायु में इनकी ऐसी दुर्दशा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ ।

गायें इधर की आध मेर, तीन पाव दूध देती हैं, और लोटी होती हैं । हिमालय की 'वशाल' उनकी नदियाँ भी देती हैं, परन्तु पहाटी मनुष्य और पशुओं पर अश्वत्थन ने पूरा प्रभाव डाला है । दुग्धकोष में दूध कम है । पहाटी कोर, लम्बारी और खन्खन 'मय' हैं । पर इधर के पहाड़ियों में इन गुणों का संवर्धन हुआ है । मकराक्षर

दासत्व ने इनका मनुष्यत्व नष्ट कर दिया है। दामना इनकी मुखाकृति पर झलक रही है। पर सरयू अपनी उमी पुरानी चाल से अपने उसी पौवन-मद् में लड़ती-झगड़ती जा रही है। उसको अपने काम से काम है। सड़क के किनारे-किनारे ठंडे सोतों का जल यात्री की प्यास को दूर करता है। तीन मील पूरे हो गये। सरयू जी की घाटी छोड़ कर जोहार का रास्ता पकड़ा। यहाँ दो पथ हैं, एक पिंदारी ग्लेशियर का जाता है, दूसरा कैलास की ओर गया है। मैं और मेरा कुछी दाहिने रास्ते हो लिये। नाले के किनारे-किनारे चले। यहाँ पर मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि पानी सभ्यता-प्रचार करने वाला बड़ा भारी इञ्जीनियर है। पहाड़ों को काट कर रास्ता बनाने वाला और सभ्यता फैलाने वाला जल है। कैसे कैसे पर्वतों को इसने काटा है, कहीं की मिट्टी ला कर यह खेत बनाता है। दुर्गम हिमालय में मार्ग बनाना इसी का काम है। नाले के किनारे-किनारे सुन्दर सड़क बनी हुई है। बादल आ जाने से ठंडा हो गया था छोटे छोटे दम-पोंच घरों का ग्राम कड़े देखने में आये। स्थान स्थान पर हरे धान लहलहा रहे थे। जहाँ थोड़ी सी भूँ मिट्टी बड़ी खेती कर लेते हैं। बेचारे इसी पहाड़ी पर जीवन

निर्वाह करते हैं। आज जुराव पहन कर नहीं चला था, इसलिए मच्छरों ने कष्ट दिया। यात्री को चाहिए कि कपिकोट से जुरावे पहन ले। जुरावे घुटनों तक हों। दो चार साथियों के साथ यात्रा करें तो अच्छा है, क्योंकि आज-कल यह रास्ता बहुत कम चलता है। कोई पथिक रास्ते में नहीं मिलता, इसलिए उन बन्धुओं को जो नगर में रहने वाले हैं, ऐसे निर्जन पथ में भय लगेगा। यद्यपि वहाँ किसी जीव-जन्तु का नहीं, और न मृदालमृद ही का भय है, पर हृदय बड़े बन्धु हैं। यहाँ एकान्त शब्द की सार्थकता बोध होने लगती है, और नास्तिक आस्तिक बनने की इच्छा करने लगता है।

नौ घील चल कर चढ़ाई मिली । धीरे-धीरे पग-पग
चढ़ना प्रारंभ किया । थोड़ी दूर चढ़ता तो थक जाता । किसी
प्रकार उन दोनों घीलों को पूरा किया । शामाधुर के निरुद्ध
पहुँचे । स्वागत के लिए दो मज्जन आगे से गये थे । बड़े
श्रेय से वे गये, और अपनी दुकान में जा कर दण्डाय,
सेवा की । अहा ! वह मनुष्य कैसा आनन्द में है । अमर
यात्रा पूर्ण होन पर श्रेय मज्जन अनुभव कर रहे हैं । और
घीले-घीले मन्त्रों से हमको धन-वश दूर कर देना । अमर
मे जब श्रेय से... मान्य की यात्रा का धन... दण्डाय

पैदल चला जाता, मगर मंजिल पूरी होने पर न उतरने का ठिकाना, न खाने का मरन्ध, न पैसा पास । वे दिन कैसे कटे थे, कभी भूलने वाले नहीं । देढ़ घण्टे बाद वडासी साधु भी पहुँच गया । स्नान किया, पत्र लिखे, कुछ विश्राम किया । चरसीनाथ भी धीरे-धीरे आ पहुँचा । ये दोनों महाशय ये निरे मूर्ख, काला मत्सर भँस बराबर था । चरसीनाथ तो अवस्था में बड़ा होने के कारण कुछ सम्म भी था, उसे कुछ सत्सङ्ग भी हो चुका था, पर वडासी साधु तो निरा गँवार पंजाबी जाट था । सिवाय खाने-पीने की बात के दूसरी चर्चा न थी । मैंने आज उसे देव-नागरी वर्णमाला के पहले छः अक्षर सिखाये । उसकी आवाज़ अच्छी, मीठी थी । इसलिए मैंने चाहा कि कुछ देश-हित-सम्बन्धी भजन सिखा कर इसे काम लिया जावे, पर उसकी स्मरण-शक्ति बड़ी ही खराब थी । वह भजन कंठ नहीं कर सकता था । दो घण्टा सिर खपा कर हार कर मैंने उसे छोड़ दिया । क्या करता ! यके हुए यात्री से पत्थर में छेद नहीं हो सकता था । रात को अच्छी तरह नींद नहीं आई । जहाँ मैं सोया था वहाँ बहुत से चूहे नाकर कबड्डी खेलने लगे । उनको मैंने बहुतोंरा मना किया, पर वे मूसरचन्द को मानने वाले थे ।

अभ्यास के लिये मदन

- १—बीजाग के मार्ग का वर्णन करो ।
- २—दीधनाथ का मन्दिर कहाँ है ? यहाँ का बुद्ध हाल लिखो ।
- ३—पर्वत-शक्त के गाँवों की दशा का चित्र खींचो ।
- ४—अर्थ लिखो और लिखने का अभ्यास करो :—
 क्षणिक, दृश्य, आश्चर्य, स्वतन्त्रता, जेनियर, दुर्गम,
 नास्तिक, आस्तिक ।
- ५—वाक्यों में इनका प्रयोग करो :—
 हम जेतने हुए, तेंदे मेंदे, सर्वथा अभाव है, रास्ता पकड़ा,
 बाजा बहर भैर बराबर, निर रुका कर, मृगच्छन्द ।

३५-फूलों का काँटा

मदन के लिये मदन
 मदन के लिये मदन
 मदन के लिये मदन
 मदन के लिये मदन

(२)

मेंद उन पर है बरसता एक सा ।
 एक सी उन पर हवायें हैं धरी ॥
 पर सदा ही यह दिखाता है हमें ।
 दूँग उनके एक से होते नहीं ॥

(३)

छेद कर कोटा किमो की उँगलियों ।
फाड़ देता है किसी का घर धमन ॥
प्यार-दुर्वा नितलियों का पर कतर ।
भोग का है वेध देता श्यामवन ॥

(8)

कृष्ण नेकर विनयियों के गोद में ।
 धर्म का धरना प्रनुदा रस विद्या ॥

निज मन्दिरों की निगल रस से
 हृदय को कटा कर काँटों से ।

शिम तरह कुल की बढ़ाई काम दें ।

जो किसी में हो बढ़प्पन की कसर ॥

अभ्यास के लिए प्रश्न

!—जोग फल से प्रेम और काटि से घृणा क्यों करते हैं ?

२—चमन, श्यामतेज, अनूठा, मुर-सीस, कमर और नौर का अर्थ बताओ ।

३ - 'आँख में खटकता है' और 'जी की कली खिजा देता है' का वाक्यों में प्रयोग करो।

३८-इंवी द्रौपदी

[महाभारत का युद्ध समाप्त होने पर भीम और दुर्योधन के बीच एक गदा युद्ध हुआ जिसमें गदा की चोटों से दुर्योधन का पैर टूट गया। दुर्योधन का पैसा हाथ में लेकर अज्ञानता ने पक्षियों पर हमला कर दिया था। अंत में अर्जुन ने पक्षियों को मारकर दुर्योधन को मार डाला।]

אשר יצאנו ממצרים ונעלה אל הרי סיני

से जकड़ा हुआ अश्वत्थामा अकड़ कर खड़ा है। उसके अगल-बगल क्रुद्ध भीम और अर्जुन सशस्त्र सावधानों से खड़े हुए हैं। कुछ सहकारी सचिव-सेवकों के वहाँ आ जाने पर युधिष्ठिर धीरता से बोले—

युधि०—गुरु-पुत्र अश्वत्थामा, आपने निरपराध बालकों का वध क्यों किया और—

भीम—(बात काटकर) इस दुष्ट को—राक्षस को आप अब भी गुरु-पुत्र कह रहे हैं ?

अश्व०—बालक निरपराध थे ही, मैं भी निरपराध हूँ।

युधि०—आप भी निरपराध हैं ? यह कैसे ?

अश्व०—अपने पिता के घातक, पाण्डवों का वध करने के लिए ही मैं आया था, उन बालकों के लिए नहीं।

युधि०—यया सोने हुए मनुष्यों का वध करना अन्याय नहीं है।

अश्व०—अन्याय है, घोर अन्याय है।

युधि०—फिर जान-बूझकर आपने अन्याय क्यों किया इसका क्या उत्तर है ?

अश्व०—अन्यायियों के साथ अन्याय करना अनुचित नहीं होना है।

युधि०—उन बालकों ने क्या अन्याय किया था ?

अश्व०—तुम लोगों ने तो किया था ?

युधि०—हम लोगों ने क्या अन्याय किया ?

अश्व०—मेरे पूज्य पिता का वध छल के साथ क्या आप लोगों द्वारा नहीं हुआ था ?

युधि०—आपके साथ हम लोगों ने क्या किया ?

अश्व०—पिता-पुत्र में विशेष भेद नहीं होता । दूसरे यह कि मेरे ही लिए पूज्य पिता जी ने शस्त्र त्याग किया था ।

भीम—अरे दुष्ट, मुझसे बातें कर । अब तो तू बंधा हुआ है । तेरी क्या दुर्गति करूँ ?

अश्व०—मूर्ख, भीष, न मैं बंधा हूँ, न मेरी दुर्गति करने वाला संसार में कोई उत्पन्न हुआ है ।

भीम—और बंधा कौन है ?

अश्व०—मेरी देह, मृद ! मुझे और मेरे हृद विचार को अपने बन्ध में करने वाला कौन है ?

अर्जुन—द्रौपदी, इस अपराधी को पकड़ने में मुझे बड़ा बल उठाना पड़ा है और युद्ध करने पर ही यह पकड़ा गया है । मैं जानता हूँ, इसका नाम तुम्हारी आँखों के सामने बिना विमर्श काटकर रख दूँ, जिससे तुम्हारी तनू टाँसी जायेगी और तब ही मैं जान

द्रौपदी—आपने धनुर्वेद किससे पढ़ा और शस्त्र-विद्या किससे सीखी ?

अर्जुन—गुरुवर द्रोणाचार्य से ।

द्रौपदी—आर्यपुत्र, गुरु के समान गुरुपुत्र भी कहा गया है । राज्य के लोभ में पड़कर या कौरवों के अत्याचार के कारण लोक-मान्य द्रोणाचार्य की इत्था, जो धर्म की दृष्टि से अनुचित है, आप लोगों की सहायता से मेरे भाई ने की है । वही सज्जुत है । अब गुरु-पुत्र का भी वध करना महा अन्याय और पाप होगा ।

भीम—द्रौपदी, जब गुरु के समान गुरुपुत्र भी है, तो जो गति गुरु की हुई, वही गुरुपुत्र की भी होनी चाहिए ।

अर्जुन—(भीम से) आप तनिक ठहर जाइए । हाँ द्रौपदी, तो क्या अश्वत्थामा छोड़ दिया जाय ?

भीम—अर्जुन, द्रौपदी की सम्मति की क्या आवश्यकता है ? वहाँ तो मैं अपनी गदा से इसके सिर को चकनाचूर कर दूँ ।

द्रौपदी—(अर्जुन से) आर्यपुत्र ! क्या आपको अपने पृथ्वी के मारे जाने का कुछ शोक है ?

अर्जुन-अत्यन्त ।

द्रौपदी-अश्वत्थामा के वध से आपके पुत्र जी सकते हैं ?

अर्जुन-कदापि नहीं ।

द्रौपदी-तो फिर गुरु-पत्नी को पुत्र-शोक देने से क्या लाभ ? पुत्र-शोक कैसा होता है, इसका अनुभव हम लोगों को हो रहा है ।

अर्जुन-फिर जैसी तुम्हारी सम्पत्ति हो ।

द्रौपदी-गुरु-पत्नी के पति-शोक से भरे हुए हृदय को अब पुत्र शोक न दिया जाय ।

अर्जुन-स्पष्ट कहो । क्या अश्वत्थामा को छोड़ दूँ ?

द्रौपदी-भवदय ।

अभ्यास के लिये प्रश्न

- १—अश्वत्थामा ने अपने को निरपराध कैसे प्रमादित करना चाहा ? क्या उसका प्रमाद ठीक था ?
- २—मौम और अर्जुन अश्वत्थामा व मलय वैमा पक्षों परना चाहते थे और द्रौपदी क्या
- ३—द्रौपदी ने अश्वत्थामा व दुष्टान व ... का नाम पुनि निकाली थी । इनमें ... का ... करना ।

[पाठ की सहायता—अध्यापिका को चाहिये कि विद्यार्थिनियों को महाभारत की कहानी संक्षेप में पता दें और साथ ही द्रौपदी के साथ जो अत्याचार हुआ था वसका भी वर्णन करते हुए अश्वत्थामा को क्षुद्र कर द्रौपदी ने जो अपने चरित्र की महानता दिखाई है उसे भी विद्यार्थिनियों को अच्छी तरह समझा दें]

३६—रसोई बनाना

रसोई बनाना प्रायः सभी स्त्रियाँ जानती हैं परन्तु दुःख की बात है कि जिस तरह रसोई बनानी चाहिए और अपने कुटुम्बी लोग को भोजन कराना चाहिए यह बहुत कम स्त्रियाँ जानती हैं । साधारण मनुष्यों की स्त्रियाँ तो भट्ठा कच्चा-पक्का किसी तरह बना कर अपने परिवार वालों को भोजन कराती भी हैं परन्तु आज-कल अमीरों के घरों की स्त्रियाँ रसोई बनाने को बहुत ही घुरा समझती हैं । उनके घरों में रसोई बनाने के लिए कोई स्त्री या पुरुष नौकर रक्खा जाता है । धार्मिक पुस्तकों में जो स्त्री के कर्त्तव्य बताये गये हैं उनमें रसोई बनाना एक प्रधान कर्त्तव्य है । जिस स्त्री में यह गुण नहीं उसकी शोभा नहीं और उसके घर में कभी

आनन्द भी नहीं। यही नहीं किसी समय उसे बड़ा दुःख
 उठाना पड़ता है। समय पड़ने पर यदि उसे घर का कोई
 कार्य करना पड़ता है तो बड़ी तकलीफ़ होती है। वस बात
 बात में रोया करती हैं। इसलिए स्त्रियों को उचित है कि
 घर में चाहे कितने ही नौकर-चाकर भरे हों परन्तु रसोई
 और परिवार का भोजन अपने ही हाथ से बनाये तो बहुत
 ही अच्छा हो। जो स्त्रियाँ अपने हाथ से बनाना नहीं जानतीं
 उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार भोजन नहीं मिलता। दूसरे
 के हाथ का कच्चा पक्का या जला भोजन नसीब होता है।
 भोजन बनाने का भार स्त्रियों पर ही रहना अच्छा है। अपने
 देश के समान यह विद्या और कहीं नहीं है। छः रस, छत्तीस
 व्यंजन और छप्पन भोजनों का बनाना यही देश जानता है।

जैसा अच्छा भोजन अपने हाथ का होता है वैसा दूसरे
 के हाथ का नहीं होता। पहले सब पदार्थ घर पर ही बनाये
 जाते थे; परन्तु ज्यों ज्यों स्त्रियाँ आलसी होती गईं त्यों ही
 त्यों इस विद्या का लोप होता गया। अब लोग जहाँ किसी
 भी चीज़ का मन चला चट बाज़ार से जाकर खरीद लाये,
 विवाह शादी में हलवाई बुलाकर बनवा लिया। परन्तु बाज़ार
 की चीज़ों में न तो वह स्वाद ही होता है न वे लोग पवित्रता
 से बनाने ही है।

होली की मिठाई की अपेक्षा इस कटु-पत्र की बातों पर विचार करने और उस पर अमल करने से कहीं अधिक समय तक, तुम्हारा जीवन आनन्दमय रहेगा। यही सोच कर मैं तुमको आज होली की मामूली मिठाई न भेज कर, इस महत्व-पूर्ण, सदा सुख पहुँचाने वाली उपदेश की अपूर्व कहुवी चीज़ भेज रही हूँ। बेटी ! ससुराल के बड़े बूढ़े लोग बहू की हर बात को टोकते रहते हैं परन्तु इससे क्या उनका मतलब दूसरे की लड़की के निरर्थक सताने का होता है ? एक बार तुमने मेरे पास ससुराल के आदमियों की शिक्षावत की थी उसी समय मेरा विचार था कि तुम्हें दो एक बातें इस विषय में समझा दूँ, परन्तु अकस्मात् तुम्हारी ससुराल जाने की तैयारी हो गई और मेरा वह विचार मन ही में रह गया।

बेटी ! अपने ससुराल वालों की शिक्षावत लिखना या किसी के द्वारा कहला भेजना, तुम्हारी भवान सुशीला कन्या के लिए बहुत अनुचित बात है। जिस घर में तुम्हें अपना जन्म बिताना है, जिस घर की भलाई-बुराई ने तुम्हारी भलाई-बुराई है उस घर की अथवा उस घर के आदमियों की छोटी छोटी बातों के लिए निन्दा करना बहुत अनुचित बात है। तुम तनिक सोचो तो कि बिना कारण का - दो - दो - — १२

तुम पर वे क्रोध क्यों करेंगे, क्या तुम्हारा और उनका पूर्व जन्म का कुछ बैर है ? बेटी, तुम इस कल्पना को भी अपने मन में मत आने दो ।

“ सास बुरी होती है, जेठानी लड़ाकी होती है और ननंद काम में बुराई या ऐव ढूँढा करती है ” तुम्हारी अज्ञान लड़कियों की सी जो यह समझ हो गई है, यह बड़ी बुरी बात है । तुम लिखती हो कि “ चूल्हे पर दूध रख कर सास बाहर गई कि इतने में बिल्ली ने दूध लुढ़का दिया, इस पर सास मुझसे नाराज़ हुई । ” बेटी ! दूध का मुक़सान होने से क्रोध का आना एक सहज बात है और उस क्रोध में कुछ का कुछ कह जाना भी स्वाभाविक बात है । इस पर तुम्हें बुरा मानना और शिकायत करना उचित न था । तुम्हारी वह बात मुझे बिल्कुल पसन्द न आई । घर की बात के बाहर जाने से घर की शोभा जाती रहती है । तुमने स्वयम् सास की चुगली करने वाली एक लड़की का बुरा हाल मुझसे बताया था ?

यदि ऐसा ही वर्तमान में रखती तो मेरा निवाह कैसे होना ? मुझे भी मेरी माम कुछ बिगड़ने पर बातें कहा करनी थीं । वह के अपराध पर माम का बोलना एक स्वाभाविक बात है । माम माँ के नुन्य होती है । क्या मैं तुमसे

काम बिगड़ने पर कुछ न कहती थी ? कल जब तुम्हारे वह आवेंगी और जब तुम्हें मालूम होगा कि मेरी वह ने मेरी शिकायत किसी से की है तो तुम्हें कैसा बुरा मालूम होगा ? मेरी चिट्ठी पढ़ कर तुम्हें दुःख होगा यह मैं जानती हूँ, परन्तु भारी परिणाम की ओर विचार करके ही मुझे ऐसा लिखना पड़ा ।

बेटी ! तुम्हारी चिट्ठी पढ़ कर यदि मैं चुप बैठ जाती तो उससे तीन प्रकार की हानियाँ होतीं । पहली हानि तो यह होती कि तुम्हें सास की शिकायत करने में उत्तेजना मिलती । दूसरी यह कि सास वह से द्वेष रखती हैं, तुम्हारी इस बात की पुष्टि होती और सब से बड़ी हानि यह होती कि तुम्हारा उनकी ओर से मन मलीन होता जाता और आगे यह सम्भव था कि तुम उनकी बातों का उत्तर भी देने लगतीं । इसका परिणाम यह होता कि सास का चित्त तुमसे हट जाता, ऐसा होना तुम्हारे लिए लाभदायक न होना । कोई कुछ कहे उसे बदमाश न करना, किसी के महज बोलने पर भी उसे कुछ उत्तर देना, स्वभाव में सहनशीलता न रखना, ये अवगुण हर एक के लिए लांछनारूपद हैं । ये सब अवगुण स्त्रियों को तो धूल में ही मिला देते हैं ।

बेटी ! तुम ही सोचो कि उत्तर-प्रत्युत्तर देने की आदत कितनी बुरी होती है । आज तुमने सास को उत्तर दिया तो कल जिसके साथ तुम्हें अपना जीवन व्यतीत करना है उस पति को भी तुम उत्तर देने में न चूकोगी । स्त्री में यदि सहन-शीलता न हो तो कुटुम्ब में किसी को सुख नहीं मिलता । इस पर यदि पति भी क्रोधो हो तो फिर पूछना ही क्या है ? रोज़ लड़ाई, रोज़ झगड़ा ।

तुम्हारे समान समझदार लड़कियों को इन बातों की बहुत खबरदारी रखनी चाहिए, तुमने अपनी चिढ़ी में लिखा है कि घर में कुछ भूल होने ही या कुछ काम बिगड़ने ही सास कहने लगती है—“यह तो स्कूल की पढ़ी लड़की है, इसे काम-काज से क्या, किताबें पढ़ कर अमर्यादित बर्ताव करना ही इसका कर्त्तव्य है । ” पढ़ी लिखी लड़कियों को ऐसा कहलाने का मौफ़ा ही न आने देना चाहिए पढ़ना-लिखना इसीलिए होता है कि लड़कियाँ जब अपनी समुराल में जावें तब वहाँ अपनी विद्या और बुद्धि के प्रभाव से सास समुर, जेठ, जिठानी, पति और अन्य घर वालों को प्रमत्त रखवें, उनकी आत्राओं का पालन करें, उन्हें सुख पहुँचावें । यदि यह काम उनसे न हुआ तो उनका लिखना ही व्यर्थ है । इसलिए बेटी तुम्हारा कर्त्तव्य है कि

तुम ऐसा अवसर कभी न आने दो, जिससे लोग तुम सरीखी लिखी पढ़ी लड़कियों की ओर अँगुली उठा सकें। घर का काम तुम ध्यान-पूर्वक करो उसमें कोई गलती न होने दो।

बेटी ! अब इन सब बातों के सोचने योग्य तुम्हारी उमर हो गई है और इसी कारण मैं इन्हें लिख भी रही हूँ। मैंने जो कुछ चिह्नों में लिखा है उसके एक एक शब्द को ध्यान पूर्वक पढ़ना और उसी के अनुकूल आचरण करना। एक बात बिना लिखे मेरा मन नहीं मानता और वह यह है कि दुरी संगति और अवगुणों से सदा बचना क्योंकि लड़कियों पर बुरी संगति का प्रभाव बहुत जल्द पड़ता है, तुम लोग अवगुणों को बहुत जल्द ग्रहण कर लेती हो। ईश्वर करे तुम सदा प्रसन्न और सुखी रहो।

तुम्हारी माता

सुशीला

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—स्त्रियों का व्यवहार अपने मान-सत्सुर एवं अन्य परिजनों के साथ कैसा होना चाहिए

२—पढ़ी लिखी लड़कियों का क्या कर्तव्य है

३—इस पाठ की शिक्षाओं को सन्नेप में लिखो।

४—निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ और उनका प्रयोग अपने वाक्यों में करो ।

सहृदय, कल्पना, महत्व-पूर्ण, उत्तेजना, लाजिनास्पर ।
